वर्ष-03 अंक-03 फरवरी-2025 | ₹ 20/-

RNI No. UPHIN/2022/84386

लखनऊ जक्शन

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

क्या यह 'आप' के अंत की शुरुआत है?

गाज़ा को लेकर ट्रंप के इरादे शक...

सनातन गर्व महाकुम्भ पर्व

दिव्य-भव्य-डिजिटल
एकता का महाकुम्भ

श्रद्धालुओं के साथ सरकार

डिजिटल महाकुम्भ
मुट्ठी में समाधान

वेबसाइट
https://kumbh.gov.in/

मोबाइल ऐप
Maha Kumbh Mela 2025

गूगल मैप्स
इंटीग्रेशन

- शौचालयों की तुरंत सफाई के लिए ऐप का इस्तेमाल
- टॉयलेट की सफाई के लिए शौचालयों पर QR Code
- किसी भी इमरजेंसी के लिए लाल रंग का QR Code
- आवास, भोजन व पार्किंग के लिए ऐप पर जानकारी

आकस्मिक सेवाएं

मेला प्रशासन

आवास एवं आहार

लोककल्याणकारी सरकार

कुम्भ सहायक चैटबॉट हेतु
QR कोड स्कैन करें

कुम्भ सहायक
वाट्सऐप नं. 8887847135
पर 'नमस्ते' भेजें

13 जनवरी से 26 फरवरी, 2025

महाकुम्भ 2025 प्रयागराज

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश | UPGovtOfficial | CMOUttarpradesh | CMOfficeUP

mahakumbh_25/ | upmahakumbh | MahaKumbh_2025 | https://kumbh.gov.in/

लखनऊ जंक्शन

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष-03 अंक-03 फरवरी-2025

संपादक
अंजू सिंह
सहायक संपादक
मनोज गौतम
राजनीतिक संपादक
अनुराग पाण्डेय
सलाहकार संपादक
सुभाष चंद्र श्रीवास्तव
प्रवीण पाठक **दिल्ली ब्यूरो**
अनिल द्विवेदी **यूपी ब्यूरो**
मीनू कुमारी **उत्तराखण्ड ब्यूरो**
लखनऊ संवाददाता
राकेश कुमार मिश्र
अरविन्द कुमार
राजेश जोशी
विशेष संवाददाता (यूपी)
तारिक खान
विशेष संवाददाता (दिल्ली)
संदीप सिंह
विधि परामर्शदाता
महेन्द्र सिंह
मार्केटिंग मैनेजर
मोहन जोशी
ग्राफिक डिजाइन
सुमित साहू
9569607491

एम.आई.जी. 47, सेक्टर ई, अलीगंज, लखनऊ
(उ0प्र0)-226024
E-mail-lkojunction@gmail.com
दूरभाष- 7376547600, 0522-4232552

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक धर्मेन्द्र सिंह द्वारा नीलम प्रिंटिंग प्रेस 41 / 381, नरही, लखनऊ (उ0प्र0) से मुद्रित एवं एम.आई.जी. 47, सेक्टर ई, अलीगंज, लखनऊ (उ0प्र0)-226024 से प्रकाशित

RNI No. UPHIN/2022/84386

इस अंक में प्रकाशित सामग्री के आंशिक या पूर्ण रूप से पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है। लेखक के विचार व्यक्तिगत हैं। किसी भी प्रकार के विवाद के समाधान के लिए न्यायक्षेत्र लखनऊ होगा।

इस अंक में

छात्र-छात्राओं की परीक्षाओं के लिए सुझाव

प्रेम, वसंत और वेलेंटाइन

समाज के विकास के लिए नारी सशक्तिकरण जरूरी

प्रयागराज भगदड़:
प्रशासनिक लापरवाही या भक्तों का उन्माद

योगी का बढ़ा कद

देश की राजधानी दिल्ली से लेकर उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ तक भाजपा नेताओं में जश्न और खुषी का माहौल है। ऐसा इसलिए क्यांकि भाजपा ने जहां 27 साल के बाद दिल्ली विधानसभा चुनाव में बहुत ही शानदार तरीके से जीत हासिल कर जहां अपना वनवास समाप्त किया, तो वहीं दूसरी ओर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में भाजपा ने मिल्कीपुर विधानसभा के उपचुनाव में जीत हासिल कर 2027 के विधानसभा चुनाव के लिए अपने विरोधी दलों पर मनोवैज्ञानिक बढ़त हासिल कर ली। विभिन्न राज्यों के विधानसभा चुनावों में भाजपा की जीत में बतौर स्टार प्रचारक स्टार प्रचारक अपनी अहम भूमिका निभाने वाले उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपनी कुशल चुनावी रणनीति से उस सपा को मिल्कीपुर उपचुनाव में करारी शिकस्त दी जो बीते लोकसभा चुनावों में फैजाबाद/अयोध्या लोकसभा सीट जीत कर सारे देश में इतराने का काम कर रही थी। लेकिन मिल्कीपुर विधानसभा चुनाव को अपनी प्रतिष्ठा से जोड़ चुके मुख्यमंत्री योगी ने वहां कमल खिलाकर सपा से अपना सारा अगला-पिछला हिसाब बराबर कर उसे विचलित करने का काम किया। राजनीतिक रुप से देखे तो भाजपा और सपा के लिए प्रतिष्ठा से जुड़ी मिल्कीपुर विधानसभा सीट के समीकरण लोकसभा चुनाव के करीब आठ महीने के बाद पूरी तरह से बदल गए। योगी के नेतृत्व में मिल्कीपुर उपचुनाव जीत कर भाजपा ने फिर ये साबित किया कि यहां उसका जनाधार अभी भी पहले जैसा ही बरकरार है। आपको बता दें कि विजय रथ पर सवार समाजवादी पार्टी ने लोकसभा चुनाव में 37 सीटें जीत ली थीं। भाजपा की सबसे बड़ी हार तो फ़ैज़ाबाद की थी। समाजवादी पार्टी ने अयोध्या वाली ये सीट भाजपा से छीन ली थी। जिस अयोध्या में पिछले साल भव्य राम मंदिर का उद्घाटन हुआ था।

वहीं इससे पूर्व पहले नौ में से सात विधानसभा सीटों के उपचुनाव जीत कर और अब खासतौर से मिल्कीपुर विधानसभा का उपचुनाव में जीत हासिल करने के बाद न सिर्फ उत्तर प्रदेश में बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर योगी कद, महत्व और उनकी प्रासंगिकता बढ़ेगी। क्योंकि लोकसभा के चुनाव में भाजपा को उत्तर प्रदेश में जो नुकसान केन्द्रीय नेतृत्व की नीतियों के कारण हुआ था, वह उपचुनावों में फ्री हैंड मिलने के बाद योगी ने अपने विरोधी दल को कैसे मात दी, यह किसी से छिपा नहीं है। और फिर उपरोक्त विधानसभा चुनावों के उपचुनाव में जीत सुनिष्चित करने के लिए अपने कुषल नेतृत्व के साथ-साथ योगी ने अपनी सरकार की जनकल्याणकारी नीतियों, विकास और हिन्तुत्व के साथ संयोजन करते हुए जो चुनावी बिसात बिछाई, खासतौर से अपने कोर वोट बैंक को जिस तरह से अपने भाशणों से एकजुट करने के लिए अपने विरोधियों पर तीखा हमला किया, वह सिर्फ योगी ही कर सकते हैं ऐसा राजनीति के जानकारों का मानना है। यानि 2029 के लोकसभा चुनावों के लिए प्रधानमंत्री पद के लिए उनकी दावेदारी अब मजबूत होते दिख रही है।

अंजू सिंह

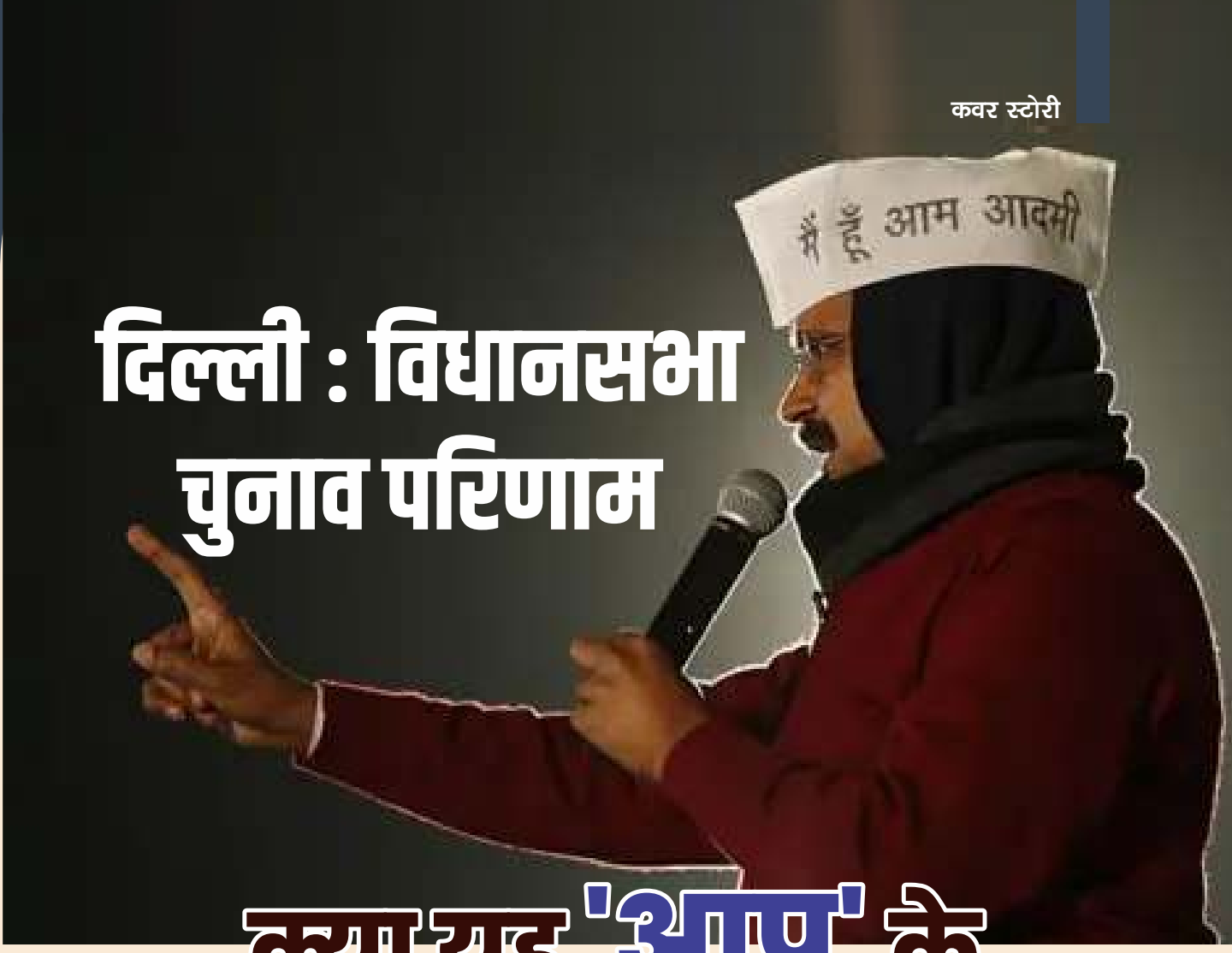

दिल्ली : विधानसभा चुनाव परिणाम

क्या यह 'आप' के अंत की शुरुआत है?

प्रवीण पाठक

दिल्ली विधानसभा चुनाव में जीत का चौका मारने की आस लगाए हुए केजरीवाल ही नहीं, बल्कि मनीश सिसोदिया, सत्येद्र जैन, राखी बिडलाना जैसे दिग्गजों के साथ-साथ आप भी बुरी तरह से चुनाव हार गई। बस यही गनीमत रही कि दिल्ली की मुख्यमंत्री रहीं आतिशी चुनाव जीत गईं। दिल्ली में आप और उसे बड़े नेताओं की हार पार्टी के लिए किसी बड़े झटके से कम नहीं हैं। पार्टी का चौथी बार सत्ता में आने का ख्वाब बुरी तरह से चकनाचूर हो गया। दिल्ली विधानसभा चुनावों में आम आदमी पार्टी (आप) की करारी हार पर पार्टी के संस्थापक सदस्य रहे प्रशांत भूषण की प्रतिक्रिया से राजनीति के जानकार और राजनीति में रुचि रखने वाले सभी लोग ही सहमत होंगे। प्रशांत भूशण ने दिल्ली विधानसभा चुनाव में पार्टी की हार के लिए अरविंद केजरीवाल को जिम्मेदार माना है। प्रशांत भूषण कहा दिल्ली में आप की हार के लिए केजरीवाल काफी हद तक जिम्मेदार हैं। वैकल्पिक राजनीति के लिए बनी एक पार्टी जिसे पारदर्शी, जवाबदेह और लोकतांत्रिक माना जाता था, उसे अरविंद ने जल्दी ही एक सुप्रीमो के वर्चस्व वाली, अपारदर्शी और भ्रष्ट पार्टी में बदल दिया, जिसने लोकपाल की मांग नहीं की और अपने खुद के

लोकपाल को हटा दिया। उन्होंने अपने लिए 45 करोड़ का शीश महल बनवाया और लग्जरी कारों में घूमने लगे। उन्होंने आप द्वारा गठित विशेषज्ञ समितियों की 33 विस्तृत नीति रिपोर्टों को यह कहते हुए रद्दी में डाल दिया कि पार्टी समय आने पर उचित नीतियां अपनाएगी। उन्हें लगता था कि राजनीति केवल दिखावे और दुष्प्रचार से ही की जा सकती है। यह आप के अंत की शुरुआत है। प्रशांत भूशण की यह प्रतिक्रिया अकारण नहीं हैं। क्योंकि केजरीवाल की राजनीतिक महत्वकांक्षा किसी से छिपी नहीं हैं। राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि दिल्ली गंवाने के बाद मुमकिन हो कि केजरीवाल पंजाब के मुख्यमंत्री बनने का प्रयास करें। ऐसे में पंजाब के मुख्यमंत्री भगवत मान भरत की तरह अपन सिंहासन आसानी से छोड़ने से रहे। जाहिर सी बात है कि वे अपनी कुर्सी बचाने के लिए अपने हाथ-पांव मारेंगे। और ऐसे लोगों को अमितशाह कैसे कैच करते है, यह किसी से छिपा नहीं है। इसलिए यह कहा जाए तो गलत नहीं होगा कि दिल्ली की करारी हार और केजरीवाल की संभावित राजनीतिक महत्वकांक्षा के मद्देनजर आप में भगदड़ मचने के आसार की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है।

विदित हो कि दिल्ली विधानसभा चुनाव में भाजपा ने प्रचंड जीत हासिल कर आम आदमी पार्टी (आप) को करारी शिकस्त दी। भाजपा को 48 तो आप को 22 सीटें मिलीं। वहीं, देश की सबसे पुरानी राजनीतिक पार्टी कांग्रेस 2015 और 2020 की तरह एक बार फिर इस बार के विधानसभा चुनाव में खाता खोलने में असफल रही, और इस तरह कांग्रेस ने दिल्ली में खाता न खोलने की हैट्रिक लगाई। इस चुनाव में भाजपा की प्रचंड जीत के पीछे कई अहम कारणों की चर्चा की जा रही है। पहले चर्चा करते है उन अहम कारणों की जिनके कारण दिल्ली में भाजपा को 27 साल बाद सत्ता मिली है। दिल्ली चुनाव के प्रचार को देखें तो भाजपा के बड़े चेहरे स्टार प्रचारक की भूमिका में मैदान में उतरे और पार्टी के लिए जोरदार प्रचार किया। भाजपा के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सबसे बड़े स्टार प्रचारक रहे, जिनकी बदौलत पार्टी लगातार हर चुनाव में शानदार प्रदर्शन करती आ रही है। दिल्ली में भाजपा की प्रचंड जीत के पीछे कांग्रेस को भी अहम कारण माना जा रहा है। हालांकि कांग्रेस का खाता नहीं खुला है। इस बार के दिल्ली विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को 6.34 प्रतिशत वोट हासिल हुआ है। यह पिछले चुनाव की तुलना में करीब दो प्रतिशत ज्यादा है। माना जा रहा है कि कांग्रेस के कारण आप को 13 सीटों का नुकसान हुआ है। बाकी इस पर विस्तृत चर्चा आलेख में आगे की जाएगी। वहीं दूसरी ओर सबसे बड़ी बात यह है कि मोदी सरकार ने कुछ दिनों पहले आम बजट में 12 लाख रुपये तक

की कमाई पर आयकर छूट का तोहफा दिया। इसे भी दिल्ली चुनाव के नतीजों में गेम चेंजर माना जा रहा है। दिल्ली में एक बड़ी आबादी मध्यम वर्ग और नौकरीपेशा वर्ग की है। आयकर में छूट देने से मोदी सरकार के ऐलान से मध्यम और नौकरीपेशा वर्ग का झुकाव भाजपा की ओर बढ़ा। चुनाव में भाजपा ने अपने प्रचार अभियान में आप के भ्रश्टाचार, खासतौर से षराब घोटला, शीश महल, वायु प्रदूषण और यमुना नदी से जुड़े मुद्दों को जोर शोर तरीके से उठाया। आप उसकी काट नहीं ढूंढ पाई। शीशमहल और यमुना की सफाई से जुड़े मुद्दे पर आप शुरु से ही बैकफुट पर नजर आती रही। आप नेताओं ने वायु प्रदूषण और यमुना नदी से जुड़े मुद्दों को हल करने में विफल रहने का ठीकरा एलजी और केंद्र सरकार पर फोड़ा। केजरीवाल ने तो यहां तक कह दिया था कि उनके नेताओं (खुद उन्हें भी) को राजनीतिक षड्यंत्र के तहत जेल भेजने के कारण दिल्ली के विकास पर ब्रेक लग गया। लेकिन, भाजपा दिल्ली की जनता के मन में केजरीवाल और आप की असफलता को बैठाने में सफल रही।

इन चुनावों में जहां भाजपा के वोट शेयर में जबरदस्त बढ़ोतरी दर्ज की गई है। वहीं आम आदमी पार्टी के वोट शेयर में कमी दर्ज की गई है। हालांकि कांग्रेस इस चुनाव में अपने वोट शेयर को बढ़ाने में कामयाब रही है। जहां भाजपा को इन चुनावों में 47.3 फीसदी वोट मिला है, वहीं आम आदमी पार्टी को 43.9 फीसदी मतदाताओं ने वोट दिया। वहीं कांग्रेस को 6.4 फीसदी वोट मिला है. खास बात है कि आम आदमी पार्टी के वोट शेयर में 9.72 फीसदी की जबरदस्त कमी देखने को मिली है तो भाजपा का वोट 7.92 फीसदी बढ़ा है। वहीं कांग्रेस के वोट शेयर में भी 2.18 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है. 2020 की अपेक्षा दिल्ली में 2025 का रंग बिलकुल अलग है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि सत्ता विरोधी लहर खामियाजा आम आदमी पार्टी की सरकार को भुगतना पड़ा है. उस पर पार्टी से नाराज मतदाताओं ने भाजपा या फिर जो भाजपा को वोट नहीं देना चाहते थे, उन्होंने कांग्रेस का विकल्प चुना. ऐसे में वोटों का बंटवारा पार्टी को सत्ता से बाहर ले गया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का चेहरा, भाजपा की कुशल चुनावी रणनीति जहां भाजपा की जीत में अहम रही, वहीं आप के संयोजक केजरीवाल गलतियां आप की हार का कारण रहीं। केजरीवाल 2020 विधानसभा चुनाव जीतने के बाद ये मान बैठे थे कि अब उन्हें दिल्ली में कोई चुनौती देने वाला नहीं है। कांग्रेस और भाजपा दोनों को वो समेट चुके थे। बस, इसी अहंकार और गलतफहमी में चूर केजरीवाल गलतियों पर गलतियां करते गए और तो वहीं दूसरी ओर भाजपा उन गलतियों पर जीत की एक-एक सीढ़ी बनाती गई और यही कारण रहे कि दिल्ली में पिछले तीन बार से सरकार चला रही आप की सत्ता से विदाई हो गई। करप्शन के खिलाफ चेहरा. स्वच्छ शासन-प्रशासन देने की समझ। स्पष्ट विजन. राजनीति में भाजपा -कांग्रेस से इतर विकल्प बनने का माद्दा। सबकुछ कहा गया। केंद्र की एजेंसियों के हत्थे चढ़ने के बाद केजरीवाल ने बहुत कुछ गंवाया। दिल्ली के नतीजों ने 'ब्रांड केजरीवाल' के साथ जुड़े तमाम चमकदार कारकों को बेरंगत कर दिया। जैसा कि उल्लेखनीय है कि दिल्ली में भाजपा शराब और शीशमहल को मुद्दा बनाने में कामयाब रही। इसका परिणाम नजर आ रहा है। आप अपने दामन पर लगे शराब घोटाले के दाग को छुड़ा नहीं पाई। भाजपा पिछले तीन साल से इस मुद्दे पर उसे घेरते रही। हालात यह थी कि इस मामले में केजरीवाल, सिसोदिया और राज्यसभा सांसद संजय सिंह को जेल तक जाना पड़ा। वह इस मुद्दे को लेकर लगातार सड़कों पर रही। उसके नेता हर जगह इस घोटाले की चर्चा करती रहे। इसके जवाब में आप कानूनी दाव पेंच के अलावा अपने बचाव में कोई ऐसा तगड़ा तर्क नहीं दे पाई, जो जनता के समझ में आए। इसका खमियाजा आम आदमी पार्टी को हार के रुप में उठाना पड़ा। आम आदमी पार्टी की सरकार बनने के साथ ही उस पर भ्रष्टाचार में शामिल होने के आरोप लगने लगे थे। शराब घोटाले के अलावा दिल्ली जल बोर्ड का घोटाला इनमें से प्रमुख था। इस मामले में ठेकेदारों से पैसे वसूलने के लिए ठेकों को कम पैसे पर छोड़ने का आरोप लगा। इस मामले की जांच प्रवर्तन निदेशालय कर रही है। दिल्ली के केजरीवाल इस मामले में भी आरोपी हैं। आप के जिन नेताओं पर भ्रष्टाचार के आरोप लगे हैं, वो पार्टी के सबसे बड़े नेताओं में हैं। यहां तक की इस आरोप से केजरीवाल भी नहीं बच सके, जिन्होंने आम आदमी पार्टी की स्थापना की थी। भाजपा ने लगातार आप पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए और जनता के बीच पहुंची। केजरीवाल शराब घोटाले में जेल गए थे। उन्हें

जमानत देते हुए सुप्रीम कोर्ट ने शर्त लगाई थी कि वो मुख्यमंत्री तो रह सकते हैं, लेकिन किसी फाइल पर दस्तखत नहीं कर सकते हैं। इससे लोगों में इस बात की ऊहापोह रही कि अगर आप चुनाव जीत भी जाती है तो मुख्यमंत्री कौन होगा। केजरीवाल भी कह चुके थे कि आतिशी कार्यवाहक मुख्यमंत्री हैं, ऐसे में लोगों को लगा कि शराब घोटाले का फैसला आने तक केजरीवाल मुख्यमंत्री के रुप में कोई काम नहीं कर पाएंगे। इसलिए लोगों ने भाजपा को ही वोट देने का फैसला किया। दिल्ली में जब चुनाव प्रचार चरम पर था तो आम आदमी पार्टी के सात विधायक पार्टी छोड़कर भाजपा में शामिल हो गए। इससे पहले आप के कई कैबिनेट मंत्री भी पार्टी का साथ छोड़कर दूसरी पार्टियों में जा चुके थे। इनमें कैलाश गहलोत और राजेंद्र पाल गौतम प्रमुख हैं। ये दोनों नेता कभी आप के प्रमुख चेहरा हुआ करते थे। इस बात का भी असर आप के चुनाव परिणाम पर पड़ा। आप लोगों में यह धारणा बना पाने में नाकाम रही कि पार्टी में सबकुछ ठीक-ठाक है और वहां नेतृत्व का कोई संकट नहीं है।

दिल्ली विधानसभा चुनाव में भाजपा की जीत और आप के सत्ता से बेदखल होने के बीच कांग्रेस की भी खूब चर्चा है। कांग्रेस इस चुनाव में अपना खाता तो नहीं खोल सकी, लेकिन कमाल देखिए कि उसने आम आदमी पार्टी का खेल जरुर बिगाड़ दिया। जो आप के चलते पंजाब गंवाने के साथ ही गुजारात, गोवा, राजस्थान और हरियाणा में हारी थी। कांग्रेस ने दिल्ली की 13 विधानसभा सीटों पर आप उम्मीदवारों का खेल बिगाड़ दिया। इनमें केजरीवाल और सिसोदिया जैसे बड़े नाम प्रमुख है। नई दिल्ली विधानसभा सीट से भाजपा के प्रवेश वर्मा ने अरविंद केजरीवाल को 4089 मतों से हरा दिया। वहीं इस सीट पर कांग्रेस उम्मीदवार संदीप दीक्षित को 4568 वोट मिले। अपनी सीट बदल कर जंगपुरा से चुनाव लड़ रहे मनीष सिसोदिया को भाजपा उम्मीदवार तरविंदर सिंह मारवाह ने 675 वोटों से मात दी। यहां पर कांग्रेस उम्मीदवार फरहद सूरी को 7350 मत मिले। साफ है कि आम आदमी पार्टी और कांग्रेस साथ आते तो यह स्थिति कुछ अलग हो सकती थी। जो नहीं आए तो इसके लिए भी केजरीवाल ही जिम्मेदार हैं। केजरीवाल के खिलाफ चुनाव लड़े दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री दिवंगत शीला दीक्षित के पुत्र संदीप दीक्षित ने कहा कि उन्होने अपनी मां की हार का बदला ले लिया। मालूम हो कि 2013 के विधानसभा चुनाव मे पहली बार चुनाव लड़ते हुए केजरीवाल ने दिल्ली की तीन बार मुख्यमंत्री रहीं शीला दीक्षित को नई दिल्ली विधानसभा सीट से चुनाव हार कर अपनी राजनीति की शानदार शुरुआत की थी। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यदि कांग्रेस और आम आदमी पार्टी ने मिलकर चुनाव लड़ा होता तो दोनों ही पार्टियों के लिए चुनाव परिणाम इतने बुरे नहीं होते। लेकिन दूसरे राज्यों में कांग्रेस का विरोध करने की केजरीवाल की नीति उन्हीं पर भारी पड़ी। यही कारण है कि आज कांग्रेस दिल्ली में बुरी तरह से हार कर भी खुश है क्योंकि उसने आप को सत्ता से बेदखल कर अब अपने आगे के लिए रास्ता साफ कर दिखाया।

मिल्कीपुर विधानसभा उपचुनाव-योगी ने अखिलेश से हिसाब चुकता किया

जीत भी ऐसी जिसकी गूंज लंबे समय तक सुनाई पड़ती रहेगी

दिल्ली विधानसभा चुनाव में भाजपा की बड़ी जीत के बाद भी मिल्कीपुर विधानसभा उपचुनाव में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में मिली भाजपा की जीत की गूंज सारे देश में सुनाई दी। मालूम हो कि उत्तर प्रदेश की मिल्कीपुर विधानसभा सीट का उपचुनाव भाजपा ने जीत लिया है। भाजपा उम्मीदवार चंद्रभानु पासवान ने इस सीट पर शानदार जीत हासिल की है। चंद्रभानु पासवान ने सपा के उम्मीदवार अजीत प्रसाद को 61,000 से अधिक मतों से हराया है। 31वें दौर की वोटों की गिनती के बाद भाजपा के चंद्रभानु पासवान को 1,46,397 वोट मिले जबकि सपा के अजीत प्रसाद को 84,687 मत प्राप्त हुए। जिसके साथ ही इस सीट पर कमल खिल गया है। बता दें मिल्कीपुर विधानसभा सीट, अवधेश प्रसाद के पिछले साल लोकसभा चुनाव में फैजाबाद सीट से निर्वाचित होने के बाद रिक्त हुई है, जिस कारण उपचुनाव कराया गया था।

मिल्कीपुर की जीत ने एक बार फिर साबित किया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जो ठान लेते हैं तो उसे पूरा करके ही दम लेते हैं। मिल्कीपुर वो सीट है, जिसे मुख्यमंत्री

योगी आदित्यनाथ हारने का जोखिम नहीं ले सकते थे। मालूम हो कि महाकुंभ 2025 के भव्य आयोजन में दिन-रात जुटे होने व दिल्ली विधानसभा के चुनाव प्रचार में सक्रिय रहने के बाद भी योगी ने इसी मिल्कीपुर को सबसे पहले अपने हाथ में लिया था। इसे अपनी और पार्टी की प्रतिष्ठा से जोड़ा और आखिर में बंपर जीत से भाजपा की झोली भर दी। इस सीट पर पार्टी की जीत सुनिश्चित करने के लिए कारगर रणनीति बनाने के साथ अपने मंत्री और विधायकों तक को योगी ने मैदान में उतार दिया। भाजपा के लिए भगवा और मदरसा कांड दो मुद्दे थे, जिसे योगी ने खूब उठाया और संगठन ने घर-घर पहुंचाया। भगवा मतलब हिंदुत्व का मुद्दा। लोकसभा में फैजाबाद (अयोध्या) सीट पर हार भाजपा के लिए एक भावनात्मक मुद्दा बन गया था। फैजाबाद की हार को सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने पूरे देश में जोर शोर से उठाया था और ऐसा लगा मानो एक हार ने भाजपा की चूलें हिला दीं। ऐसे में मुख्यमंत्री योगी ने इसे एक चैलेज के रूप में लिया और मिल्कीपुर को हिंदुत्व के प्रयोगशाला के तौर पर सामने रखा। वहीं, मदरसा कांड के जरिए सपा के मुस्लिम तुष्टिकरण पर हमला करते रहे। मदरसा कांड का सीधा मतलब वो गैंगरेप कांड था, जिसमें अवधेश प्रसाद का बेहद करीबी मोईद खान एक नाबालिग और अति पिछड़ी बिरादरी की लड़की के साथ गैंगरेप का आरोपी था। यूपी के मिल्कीपुर में हुए उपचुनाव ने एक बार फिर ये साबित किया कि भारतीय जनता पार्टी का जनाधार अभी भी पहले जैसा ही बरकरार है। जिस अयोध्या में पिछले साल भव्य राम मंदिर का उद्घाटन हुआ था। यहां से सांसद चुने गए अवधेश प्रसाद को इंडिया गठबंधन ने सामाजिक न्याय का चेहरा बनाया था, पर आज वही अवधेश प्रसाद मिल्कीपुर में अपने बेटे की लाज नहीं बचा पाए। न तो उनका रोना काम आया न ही उनका दलित वाला कार्ड। भाजपा ने फैजाबाद की बार का बदला मिल्कीपुर जीत कर हिसाब बराबर कर दिया। जीत भी ऐसी जिसकी गूंज लंबे समय तक सुनाई पड़ती रहेगी। समाजवादी पार्टी की सारी नीति और रणनीति ध्वस्त हो गई। अखिलेश यादव का प्रचार और उनका सांसद पत्नी डिंपल यादव का रोड शो भी काम नहीं आया। इसके मुक़ाबले योगी का हर दांव हिट रहा। योगी का हिंदुत्व कार्ड भी चला और सामाजिक समीकरण भी काम आया। महाकुंभ में भगदड़ के बहाने योगी सरकार की सनातन विरोधी छवि बनाने की अखिलेश की कोशिश भी फुस्स हो गई। एक नज़्म है बात निकलेगी तो दूर तलक जाएगी। अब मिल्कीपुर की जीत से जो बात निकली है तो वह पूरे उत्तर प्रदेश भर के लिए है। कहने के लिए तो ये बस एक विधानस सीट का उपचुनाव था। पर इसके पीछे गहरे राजनैतिक संदेश छिपे हैं। मिल्कीपुर की सीट एसी के लिए सुरक्षित है। समाजवादी पार्टी को भरोसा अपने पीडीए वाले सोशल इंजीनियरिंग पर था। इलाके में अवधेश प्रसाद का अच्छा ख़ासा प्रभाव रहा है। वे खुद नौ बार विधायक रहे हैं। उनके सांसद बनने के बाद मिल्कीपुर सीट ख़ाली हुई थी। इसलिए अखिलेश यादव ने उनके बेटे अजीत प्रसाद को टिकट दिया था। भाजपा ने भी योगी की सलाह पर उनके सामने अपने पासी नेता चंद्रभानु पासवान को उतार दिया। चुनावी नतीजे बताते हैं कि भाजपा ने पासी वोट बैंक में ज़बरदस्त सेंधमारी की है। मिल्कीपुर में करीब 80 हज़ार पासी वोटर हैं। समाजवादी पार्टी के लिए सबसे बुरी खबर यादव वोटों में बंटवारे की है। मिल्कीपुर में इस बिरादरी के 50 हज़ार वोटर हैं। समाजवादी पार्टी पासी, यादव और मुस्लिम वोटरों के दम पर चुनाव जीतने की तैयारी में थी। पर इस बार तो अपना बेस वोट बैंक ही बिखर गया। रुदौली के भाजपा विधायक रामचंद्र यादव के प्रभाव के कारण यादव समाज का एक तबका भाजपा से जुड़ गया। इससे पहले करहल के उपचुनाव में भी यादव वोट बंटे थे। मिल्कीपुर मे 30 हज़ार मुस्लिम वोटर हैं। इनके बारे में कहा जाता है कि ये समाजवादी पार्टी के वोटर हैं। पर इस चुनाव में एक तबका घर से बाहर वोट डालने ही नहीं निकला। मिल्कीपुर और उससे पहले नौ विधानसभा सीट के उपचुनावों में मिली जीत के बाद जाहिर है कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के लिए 2027 के विधानसभा चुनावों में लगातार तीसरी बार जीत हासिल करने का आत्मविश्वास बढ़ा होगा और वहीं सपा के और उसके प्रमुख अखिलेश यादव के लिए उपचुनावों में करारी हार एक सबक है। यह उसे कैसे लेते हैं, यह उनके राजनीतिक विवेक पर निर्भर है।

छात्र-छात्राओं की परीक्षाओं के लिए सुझाव

डॉ. अनीता वर्मा

आगामी बोर्ड परीक्षा के तैयारी के लिए पेस्टल वीड कॉलेज ऑफ़ इनफर्मेशन टेक्नोलॉजी देहरादून के प्रिंसिपल डॉ. अनीता वर्मा की ओर से परीक्षा में भाग लेने वाले सभी छात्र-छात्राओं के लिए सुझाव दिए गए हैं जिन्हें अपना कर छात्र सफलता के शिखर को प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा याद रखें, ये परीक्षाएँ सिर्फ़ आपके ज्ञान की परीक्षा नहीं हैं, बल्कि आपकी कड़ी मेहनत, लगन और दृढ़ता का भी प्रमाण हैं। आपने अध्ययन और तैयारी में अनगिनत घंटे लगाए हैं, और अब समय आ गया है कि आप अपनी मेहनत का फल दिखाएँ और नए व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश लें।

यहाँ कक्षा 10वीं और 12वीं बोर्ड परीक्षा (2025) के छात्रों को सफल होने में मदद करने के लिए अंतिम 15 दिनों की रणनीति के कुछ आवश्यक सुझाव दिए गए हैं:

अध्ययन योजना बनाएँ: अपने अध्ययन कार्यक्रम की योजना पहले से ही बना लें। अपनी ताकत और कमज़ोरियों के आधार पर विषयों को प्राथमिकता दें, और परीक्षाओं से पहले संशोधन के लिए पर्याप्त समय आवंटित करें।

पाठ्यक्रम और परीक्षा पैटर्न को समझें: पाठ्यक्रम और परीक्षा पैटर्न से खुद को परिचित करें। इससे आपको महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान केंद्रित करने और तैयारी के दौरान अनावश्यक भ्रम से बचने में मदद मिलेगी।

नोट्स बनाएँ: पढ़ाई करते समय, परीक्षा से पहले जल्दी से रिवीजन करने में मदद के लिए संक्षिप्त नोट्स बनाएँ। मुख्य अवधारणाओं, सूत्रों और महत्वपूर्ण बिंदुओं पर ध्यान दें।

लेखन कौशल में सुधार करें: उचित प्रस्तुति और संरचना पर ध्यान देते हुए स्पष्ट और संक्षिप्त तरीके से उत्तर लिखने का अभ्यास करें। अनावश्यक रूप से लंबे उत्तर लिखने से बचें - आवश्यक बिंदुओं पर टिके रहें।

नियमित रूप से अभ्यास करें: पिछले वर्षों के प्रश्नपत्र और सैंपल पेपर हल करें। इससे आपको परीक्षा प्रारूप के अभ्यस्त होने और अपने समय प्रबंधन कौशल में सुधार करने में मदद मिलेगी।

समय प्रबंधन पर ध्यान दें: अध्ययन सत्र और वास्तविक परीक्षा दोनों के दौरान समय प्रबंधन महत्वपूर्ण है। यह सुनिश्चित करने के

लिए कि आप समय पर परीक्षा पूरी कर सकें, आवंटित समय के भीतर पेपर हल करने का अभ्यास करें।

लगातार बने रहें: जानकारी को बनाए रखने के लिए निरंतरता महत्वपूर्ण है। रोजाना पढ़ाई करें और आखिरी समय में रटने से बचें, जिससे तनाव और भ्रम हो सकता है।

ब्रेक लें: बिना ब्रेक के लंबे समय तक पढ़ाई करने से बर्नआउट हो सकता है। अपने दिमाग को तरोताजा करने के लिए पढ़ाई के दौरान छोटे-छोटे ब्रेक लें।

स्वस्थ रहें: सुनिश्चित करें कि आप पर्याप्त नींद ले रहे हैं, स्वस्थ भोजन कर रहे हैं और हाइड्रेटेड रह रहे हैं। बेहतर प्रदर्शन के लिए शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य ज़रूरी है। परीक्षा के दिन तरोताज़ा और केंद्रित रहने के लिए रात को अच्छी नींद लें।

ध्यान भटकाने वाली चीज़ों से बचें: पढ़ाई के दौरान सोशल मीडिया या फ़ोन के अनावश्यक इस्तेमाल जैसी चीज़ों से ध्यान भटकाने वाली चीज़ों को कम से कम करें। ध्यान केंद्रित करके पढ़ाई का माहौल बनाएँ।

सकारात्मक और आत्मविश्वासी रहें: अपनी तैयारी पर भरोसा रखें। परीक्षा के दौरान शांत और आत्मविश्वासी रहें। सकारात्मक सोच चिंता को कम कर सकती है और प्रदर्शन को बेहतर बना सकती है।

समीक्षा करें और रिवीजन करें: सीखने को मज़बूत करने के लिए नियमित रूप से विषयों को रिवीजन करें। परीक्षा से पहले के आखिरी कुछ दिन समीक्षा करने और संदेह दूर करने के लिए समर्पित होने चाहिए।

मदद लें: अगर आपको किसी विषय या टॉपिक में परेशानी आती है, तो शिक्षकों, साथियों या ऑनलाइन संसाधनों से मदद लें। संदेहों को जल्दी दूर करने में संकोच न करें।

मुख्य फ़ार्मुलों और परिभाषाओं की समीक्षा करें और रिवीजन करें: गणित और विज्ञान जैसे विषयों में, समस्याओं को सही ढंग से हल करने के लिए फ़ार्मुलों और परिभाषाएँ ज़रूरी हैं। कक्षा 10वीं और 12वीं बोर्ड परीक्षा 2025 के लिए अंतिम 15 दिनों की रणनीति में इन महत्वपूर्ण तत्वों की समीक्षा के लिए समर्पित समय शामिल होना चाहिए। सूत्रों, नियमों और परिभाषाओं का त्वरित संशोधन आपको परीक्षा के दौरान उन्हें जल्दी याद करने में मदद करेगा। त्वरित संदर्भ के लिए एक सूत्र पत्रक या फ़्लैशकार्ड बनाएँ।

नए विषयों से बचें: किसी भी अंतिम-मिनट के अध्याय या विषय को कवर करने की कोशिश करना लुभावना है, लेकिन इससे अनावश्यक तनाव हो सकता है और आपको मनचाहा परिणाम नहीं मिल सकता है। अंतिम 15 दिनों का उपयोग संशोधन के लिए किया जाना चाहिए, न कि नए विषयों को सीखने के लिए। इसके बजाय, अपने पास पहले से मौजूद ज्ञान को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित करें और इसे प्रभावी ढंग से लागू करने का अभ्यास करें। आराम करें और रात को रटने से बचें। अपना समय मुख्य अवधारणाओं को हल्के से संशोधित करने में लगाएँ।

आवश्यक सामग्री इकट्ठा करें: अपना एडमिट कार्ड, पेन, पेंसिल और कोई भी अन्य आवश्यक स्टेशनरी सहित अपनी परीक्षा किट पहले से तैयार कर लें।

उपरोक्त रणनीतियों का पालन करके, छात्र अपनी तैयारी में सुधार कर सकते हैं और बोर्ड परीक्षाओं में सफलता की संभावना बढ़ा सकते हैं। सही दृष्टिकोण के साथ, ये अंतिम 15 दिन आपकी सफलता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकते हैं। ये टिप्स छात्रों को अंतिम 15 दिनों में अपनी सीबीएसई बोर्ड परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने में मदद करेंगे। हालांकि, समय प्रबंधन और समर्पण के बिना, ये टिप्स कुछ भी नहीं हैं। हालाँकि बोर्ड परीक्षाओं में 90% प्राप्त करना चुनौतीपूर्ण है, लेकिन ये टिप्स आपको अपने लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त करने में मदद कर सकते हैं।

इसलिए, सकारात्मक मानसिकता के साथ परीक्षा हॉल में जाएँ, अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें, और पछतावे के लिए कोई जगह न छोड़ें। खुद पर विश्वास करें, और अपनी मेहनत को चमकने दें, आप सभी को वह सफलता और संतुष्टि मिले जिसके आप हकदार हैं।

प्रेम, वसंत और वेलेंटाइन

आकांक्षा यादव
कॉलेज में प्रवक्ता, साहित्य, लेखन और ब्लॉगर

प्यार क्या है ? यह एक बड़ा अजीब सा प्रश्न है। पिछले दिनों इमरोज जी का एक इण्टरव्यू पढ़ रही थी, जिसमें उन्होंने कहा था कि जब वे अमृता प्रीतम के लिए कुछ करते थे तो किसी चीज की आशा नहीं रखते थे। जाहिर है प्यार का यही रूप भी है, जिसमें व्यक्ति चीजें आत्मिक खुशी के लिए करता है न कि किसी अपेक्षा के लिए। पर क्या वाकई यह प्यार अभी जिन्दा है? हम वाकई प्यार में कोई अपेक्षा नहीं रखते। यदि रखते हैं तो हम सिर्फ रिश्ते निभाते हैं, प्यार नहीं? क्या हम अपने पति, बच्चों, माँ-पिता, भाई-बहन, से कोई अपेक्षा नहीं रखते। सवाल बड़ा जटिल है पर प्यार का पैमाना क्या है? यदि किसी दिन पत्नी या प्रेमिका ने बड़े मन से खाना बनाया और पतिदेव या प्रेमी ने तारीफ के दो शब्द तक नहीं कहे, तो पत्नी का असहज हो जाना स्वाभाविक है। अर्थात् पत्नी/प्रेमिका अपेक्षा रखती है कि उसके अच्छे कार्यों की सराहना की जाय। यही बात पति या प्रेमी पर भी लागू होती है। वह चाहे मैनर हो या औपचारिकता, मुख से अनायास ही निकल पड़ता है- 'धन्यवाद या इसकी क्या जरूरत थी।' यहाँ तक कि आपसी रिश्तों में भी ये चीजें जीवन का अनिवार्य अंग बन गई हैं। जीवन की इस भागदौड़ में ये छोटे-छोटे शब्द एक आश्वस्ति सी देते हैं। पर सवाल अभी भी वहीं है कि क्या प्यार में अपेक्षायें नहीं होती हैं? सिर्फ दूसरे की खुशी अर्थात् स्व का भाव मिटाकर चाहने की प्रवृत्ति ही प्यार कही जायेगी। यहाँ पर मशहूर दार्शनिक ख़लील जिब्रान के शब्द याद आते हैं- "जब पहली बार प्रेम ने अपनी जादुई किरणों से मेरी आंखें खोली थीं और अपनी जोशीली अंगुलियों से मेरी रुह को छुआ था, तब दिन सपनों की तरह और रातें विवाह के उत्सव की तरह बीतीं।"

भारतीय संस्कृति में तो इस प्यार के लिए एक पूरा मौसम ही है- वसंत। वसंत तो प्रकृति का यौवन है, उल्लास की ऋतु है। इसके आते ही फिजा में रुमानियत छाने लगती है। निराला जी कहते हैं-

सखि वसंत आया
भरा हर्ष वन के मन
नवोत्कर्ष छाया।

वसंत के सौंदर्य में जो उल्लास मिलता है, फिर हर कोई चाहता है कि अपने प्यार के इजहार के लिए उसे अगले वसंत का इंतजार न करना पड़े। भारतीय संस्कृति में ऋतुराज वसंत की अपनी महिमा है। प्यार के बहाने वसंत की महिमा साहित्य और लोक संस्कृति में भी छाई है। तभी तो 'अज्ञेय' ऋतुराज का स्वागत करते नजर आते हैं-

अरे ऋतुराज आ गया।
पूछते हैं मेघ, क्या वसंत आ गया?
हंस रहा समीर, वह छली भुला गया।
किंतु मस्त कोंपलें सलज्ज सोचती-
हमें कौन स्नेह स्पर्श कर जगा गया?
वही ऋतुराज आ गया।

प्रेम आरम्भ से ही आकर्षण का केंद्र बिंदु रहा है। कबीर ने तो यहाँ तक कह दिया कि-'ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।' प्रेम को लेकर न जाने कितना कुछ कहा गया, रचा गया। यहाँ तक कि वैदिक ऋचायें भी इससे अछूती नहीं रहीं। वहाँ भी प्रेम की महिमा गाई गई है। अथर्ववेद के एक प्रेम गीत 'प्रिया आ' के हिन्दी में रूपांतरित सुमधुर बोल अनायास ही दिलोदिमाग को झंकृत करने लगते हैं-

मत दूर जा/लिपट मेरी देह से/
लता लतरती ज्यों पेड़ से/मेरे तन के तने पर /
तू आ टिक जा/अंक लगा मुझे/

कभी न दूर जा/पंछी के पंख कतर/
ज़मीं पर उतार लाते ज्यों/छेदन करता मैं तेरे दिल का/
प्रिया आ, मत दूर जा।/धरती और अंबर को /
सूरज ढक लेता ज्यों/तुझे अपनी बीज भूमि बना/
आच्छादित कर लूंगा तुरंत/प्रिया आ, मन में छा/
कभी न दूर जा/आ प्रिया!

प्रेम एक बेहद मासूम अभिव्यक्ति है। अर्थववेद में समाहित ये प्रेम गीत भला किसे न बांध पायेंगे। जो लोग प्रेम को पश्चिमी चश्मे से देखने का प्रयास करते हैं, वे इन प्रेम गीतों को महसूस करें और फिर सोचें कि भारतीय प्रेम और पाश्चात्य प्रेम का फर्क क्या है? प्रेम सिर्फ दैहिक नहीं होता, तात्कालिक नहीं होता, उसमें एक समर्पण होता है। अथर्ववेद के ही एक अन्य गीत 'तेरा अभिषेक करुं मैं' में अतर्निहित भावाभिव्यक्तियों को देखें-

पृथ्वी के पयस से/अभिषेक करूँ/
औषध के रस से/करुं अभिषेक/
धन-संतति से/सुख-सौभाग्य सभी/तुझ पर वार करुं मैं।/
यह मैं हूं/वह तुम/मैं साम/तुम ऋचा/मैं आकाश/तुम धरा/
हम दोनों मिल/सुख सौभाग्य से/संतति संग/जीवन बिताएं।

वेदों की ऋचाओं से लेकर कबीर-बानी के तत्व को सहेजता यह प्रेम सिर्फ लौकिक नहीं अलौकिक और अप्रतिम भी है। इसकी मादकता में भी आत्म और परमात्म का ज्ञान है। तभी तो आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते हैं- "वसंत का मादक काल उस रहस्यमय दिन की स्मृति लेकर आता है, जब महाकाल के अदृश्य इंगित पर सूर्य और धरती-एक ही महापिंड के दो रुप-उसी प्रकार वियुक्त हुए थे जिस प्रकार किसी दिन शिव और शक्ति अलग हो गए थे। तब से यह लीला चल रही है।" हमारे यहाँ तो प्रेम अध्यात्म से लेकर पोथियों तक पसरा पड़ा है। उसके लिए किसी साकार और निर्विकार का भेद नहीं बल्कि महसूस करने की जरुरत है। राधा-कृष्ण का प्रेम भी अपनी पराकाष्ठा था तो उसी कृष्ण के प्रेम में मीरा का जोगन हो जाना भी पराकाष्ठा को दर्शाता है। आखिर इस प्रेम में देह कहाँ है ? खजुराहो और कोणार्क की भित्त मूर्तियाँ तो देवी-देवताओं को भी अलंकृत करती हैं। फिर कबीर भला क्यों न कहें-'ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।'

पर दुर्भाग्यवश आज की युवा पीढ़ी प्यार के लिए भी पाश्चात्य संस्कृति की ओर झाँकती है। लैला-मजनू, शीरी-फरहाद, रोमियो-जूलियट के प्यार के किस्से सुनते-सुनते जो पीढ़ियाँ बड़ी हुईं, उनके अंदर प्रेम का अनछुआ अहसास कब घर कर गया पता ही नहीं चला। मन ही मन में किसी को चाहने और यादों में जिन्दगी गुजार देने का फलसफा देखते ही देखते पुराना हो गया। फिल्मों, टीवी सीरियलों, ओटीटी प्लेटफॉर्म पर वेब सीरीज ने प्रेम को अभिव्यक्त करने के ऐसे-ऐसे तरीके बता दिए कि युवा पीढ़ी वाकई 'मोबाइल' हो गई, पत्रों की जगह 'चैट' ने ले ली और अब प्यार का इजहार सोशल मीडिया और व्हाट्सएप पर किया जाने लगा। प्रेम का रस उसे वेलेण्टाइन-दिवस में दिखता है, जो कि कुछ दिनों का खुमार मात्र है । ऋतुराज वसंत और इसकी मादकता की महिमा वह तभी जानता है, जब वह 'वेलेण्टाइन' के पंखों पर सवार होकर अपनी खुमारी फैलाने लगे। दरअसल यही दुर्भाग्य है कि हम जब तक किसी चीज पर पश्चिमी सभ्यता का ओढ़ावा नहीं ओढ़ा लेते, उसे मानने को तैयार ही नहीं होते। 'योग' की महिमा हमने तभी जानी जब वह 'योगा' होकर आयातित हुआ। और यही बात इस प्रेम पर भी लागू हो रही है। काश कि वे बसंती बयार में मदमदाते इस प्यार को अंदर से महसूस करते-

शुभ हो वसंत तुम्हें
शुभ्र, परितृप्त, मंद मंद हिलकोरता
ऊपर से बहती है सूखी मंडराती हवा,
भीतर से न्योतता विलास गदराता है
ऊपर से झरते हैं कोटि कोटि सूखे पात
भीतर से नीर कोंपलों को उकसाता है
ऊपर से फटे से हैं सीठे अधजगे होठ
भीतर से रस का कटोरा भरा आता है।
(विजयदेव नारायण साही)

फिलहाल वेलेण्टाइन-डे का खुमार युवाओं के दिलोदिमाग पर चढ़कर बोल रहा है। जो प्रेम कभी भीनी खुशबू बिखेरकर चला जाता था, वह जोड़ों को घर से भगाने लगा। कोई इसी दिन पण्डित से कहकर अपना विवाह-मुहूर्त निकलवाता है तो कोई इसे अपने जीवन का यादगार लम्हा बनाने का दूसरा बहाना ढूंढता है। एक तरफ नैतिकता की झंडाबरदार सेनायें वेलेण्टाइन-डे का विरोध करने और इसी बहाने चर्चा में आने का बेसब्री से इंतजार करती हैं- 'करेंगे डेटिंग तो करायेंगे वेडिंग।' यही नहीं इस सेना के लोग अपने साथ पण्डितों को लेकर भी चलते हैं, जिनके पास 'मंगलसूत्र' और 'हल्दी' होगी। अब वेलेण्टाइन डे के बहाने पण्डित जी की भी बल्ले-बल्ले है तो प्रेम की राह में 'खाप पंचायतें' भी अपना हुक्म चलाने लगीं। जब सबकी बल्ले-बल्ले हो तो भला बहुराष्ट्रीय कम्पनियां कैसे पीछे रह सकती हैं। प्रेम कभी दो दिलों की धड़कन सुनता था, पर बाजारवाद की अंधी दौड़ ने इन दिलों में अहसास की बजाय गिफ्ट, ग्रीटिंग कार्ड, चाकलेट, फूलों का गुलदस्ता भर दिया और प्यार मासूमियत की जगह हैसियत मापने वाली वस्तु हो गई। 'प्रेम' रूपी बाजार को भुनाने के लिए उन्होंने वेलेण्टाइन-डे को बकायदा कई दिनों तक चलने वाले 'वेलेण्टाइन-उत्सव' में तब्दील कर दिया है। यही नहीं, हर दिन को अलग-अलग नाम दिया है और लोगों की जेब के अनुरूप गिफ्ट भी तय कर दिये हैं। हर दिन को कार्पोरेट जगत से लेकर मॉल कल्चर और होटलों की रंगीनी से लेकर सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्स और मीडिया की फ्लैश में चकाचौंध कर दिया जाता है, और जब तक प्यार का खुमार उतरता है, करोड़ों के वारे-न्यारे हो चुके होते हैं। टेक्नॉलाजी ने जहाँ प्यार की राहें आसान बनाई, वहीं इस प्रेम की आड़ में डेटिंग और लिव-इन-रिलेशनशिप इतने गड्डमगड्ड हो गए कि प्रेम का 'शरीर' तो बचा पर उसका 'मन' भटकने लगा। प्रेम के नाम पर बचा रह गया 'देह विमर्श' और फिर एक प्रकार का उबाउपन। काश वसंत के मौसम में प्रेम का वह अहसास लौट आता- वसंत/वही आदर्श मौसम/और मन में कुछ टूटता सा/अनुभव से जानता हूँ/कि यह वसंत है (रघुवीर सहाय)।

समाज के विकास के लिए नारी सशक्तिकरण जरूरी

कृष्ण कुमार यादव

सृष्टि के आरम्भ से ही नर व नारी एक दूसरे के पूरक रहे हैं। यह बात इस तथ्य से बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है कि यदि नर व नारी दोनों में से कोई भी एक न हुआ होता तो सृष्टि की रचना ही सम्भव न थी। कुछेक अपवादों को छोड़कर विश्व में लगभग हर प्रकार के जीव-जन्तुओं में दोनों रूप नर-मादा विद्यमान हैं। समाज में यह किवदंती प्रचलित है कि भगवान भी अर्द्धनारीश्वर हैं अर्थात उनका आधा हिस्सा नर का है और दूसरा नारी का। यह एक तथ्य है कि पुरुष व नारी के बिना सृष्टि का अस्तित्व संभव नहीं, दोनों ही एक-दूसरे के पूरक हैं। राजनीति, प्रशासन, समाज, उद्योग, व्यवसाय, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, फिल्म, संगीत, साहित्य, मीडिया, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, वकालत, कला-संस्कृति, शिक्षा, आई. टी., खेल-कूद, सैन्य से लेकर अंतरिक्ष तक नारी ने छलांग लगाई है। नारी की नाजुक शारीरिक संरचना के कारण यह माना जाता रहा है कि वे सुरक्षा जैसे कार्यों का निर्वहन नहीं कर सकतीं। पर बदलते वक्त के साथ यह मिथक टूटा है। महिलाएं आज पुलिस, सेना, और अर्द्धसैनिक बलों में बेहतरीन तैनाती पा रही हैं।

जैविक आधार पर देखें तो स्त्री-पुरुष की संरचना समान नहीं है। उनकी शारीरिक-मानसिक शक्ति में असमानता है तो बोलने के तरीके में भी । इन सब के चलते इन दोनों में और भी कई भेद दृष्टिगत होते हैं। इसी आधार पर कुछ विचारकों का मानना है कि, "स्त्री-पुरुष असमता का कारण सर्वथा जैविक है।" अरस्तू ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि, "स्त्रियाँ कुछ निश्चित गुणों के अभाव के कारण स्त्रियाँ हैं" तो संत थॉमस ने स्त्रियों को "अपूर्ण पुरुष" की संज्ञा दी। पर जैविक आधार मात्र को स्वीकार करके हम स्त्री के गरिमामय व्यक्तित्व की अवहेलना कर रहे हैं। प्रकृति द्वारा स्त्री-पुरुष की शारीरिक संरचना में भिन्नता का कारण इस सृष्टि को कायम रखना था । अतः शारीरिक व बौद्धिक दृष्टि से सबको समान बनाना कोरी कल्पना मात्र है। अगर हम स्त्रियों को इस पैमाने पर देखते हैं तो इस तथ्य की अवहेलना करना भी उचित नहीं होगा कि हर पुरुष भी शारीरिक व बौद्धिक दृष्टि के आधार पर समान नहीं होता। अतः इस सच्चाई को स्वीकार करके चलना पड़ेगा कि जैविक दृष्टि से इस जगत में भेद व्याप्त है, पर इसे किसी की क्षमताओं को

कमतर करने के रूप में नहीं देखा जा सकता।

पूरे विश्व में नारियों को अपनी पहचान बनाने लिए काफी संघर्ष करना पड़ा। 1900 के आरंभ में 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' मनाने की शुरुआत हुई थी। वर्ष 1908 में न्यूयार्क की एक कपड़ा मिल में काम करने वाली करीब 15 हजार महिलाओं ने काम के घंटे कम करने, बेहतर वेतन और वोट का अधिकार देने के लिए प्रदर्शन किया था। इसी क्रम में 1909 में अमेरिका की ही सोशलिस्ट पार्टी ने पहली बार नेशनल वुमन-डे मनाया था। वर्ष 1910 में डेनमार्क के कोपेनहेगन में कामकाजी महिलाओं की अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस हुई जिसमें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महिला दिवस मनाने का फैसला किया गया और 1911 में पहली बार 19 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। उस समय इसका प्रमुख ध्येय महिलाओं को वोट देने का अधिकार दिलवाना था क्योंकि उस समय अधिकतर देशों में महिलाओं को वोट देने का अधिकार नहीं था। इसे सशक्तिकरण का रूप देने हेतु लाखों महिलाओं ने रैलियों में हिस्सा लिया। 1911 में ही महिलाओं के अधिकार के लिये लड़ने वाली नेन्सी एस्टर, ब्रिटिश संसद की पहली महिला सासंद बनीं। जैसे-जैसे महिलाएं मुखर होती गईं, आंदोलनों दायरा भी बढ़ता गया। 1917 में रुस की महिलाओं ने, महिला दिवस पर रोटी और कपड़े के लिये हड़ताल पर जाने का फैसला किया। यह हड़ताल भी ऐतिहासिक थी। अंततः जार ने सत्ता छोड़ी और अन्तरिम सरकार ने महिलाओं को वोट देने के अधिकार दिये। उस समय रुस में जुलियन कैलेंडर चलता था और बाकी दुनिया में ग्रेगेरियन कैलेंडर। इन दोनो की तारीखों में कुछ अन्तर है। जुलियन कैलेंडर के मुताबिक 1917 की फरवरी का अंतिम रविवार 23 फरवरी को था जबकि ग्रेगेरियन कैलैंडर के अनुसार उस दिन 8 मार्च था। इस समय पूरी दुनिया में (यहाँ तक कि रुस में भी) ग्रेगेरियन कैलैंडर चलता है। तब से विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के प्रति सम्मान, प्रशंसा और प्यार प्रकट करते हुए 8 मार्च को महिलाओं के राजनीतिक, सामाजिक, और आर्थिक उपलब्धियों के उपलक्ष्य में महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है।

वस्तुतः समानता का व्यावहारिक रुप है "अधिकार की समानता।" यह समानता शारीरिक पहलुओं से परे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व पारिवारिक क्षेत्रों में व्याप्त है। इस प्रकार लिंग समानता का तात्पर्य है, "जैविक भेदों या लिंग के आधार पर असमानता नहीं होनी चाहिए।" इसी नैतिक सूत्र पर लिंग-समता का पूरा विचार टिका हुआ है। लिंग समता का प्रश्न किसी देश विशेष तक सीमित नहीं रहा है अपितु एक विश्वव्यापी अवधारणा है। चाहे वह राजनीति, प्रशासनिक, अर्थनीति, सामाजिक या रोजगार का क्षेत्र हो, सर्वत्र नारी पुरुषों से कदम से कदम मिलाकर चल रही है। लिंग असमानता का विकृत रुप जन्म से ही देखा जा सकता है जब कन्या-भ्रूण की पेट में ही हत्या कर दी जाती है। शायद इसी कारण माना जाता है कि - "स्त्री-पुरुष असमता का एक कारण स्त्री स्वयं ही है ।" चाहे वह लालन-पालन हो, शिक्षा हो, रोजगार हो, कई बार स्त्री ने ही अपनी बेटियों को बेटों की बजाय गौण स्थान प्रदान किया है। यद्यपि इस मानसिकता में समय के साथ काफी परिवर्तन हुआ है, परंतु यह ध्यान देना होगा कि नारी स्वयं ही बेटा-बेटी के बीच भेदभाव का कारण न बने।

यहाँ पर प्रश्न उठता है कि नर-नारी समानता माने क्या? क्या नारी द्वारा हर वो कर्म किया जाना समानता का प्रतीक होगा जो पुरुष कर सकते हैं। तमाम पाश्चात्य देशों में नारी-स्वतंत्रता के नाम पर स्त्रियों ने वर्जनाओं को तोड़ने और उन्मुक्तता को ही स्वतंत्रता का नाम दिया है पर इसे पूर्णतया उचित ठहराना सम्भव नहीं। महिलाओं को बाजार में उपभोक्ता वस्तुओं की बिक्री में लुभाने के अंदाज के कारण भी यह स्थिति उत्पन्न हुई। कुछेक इस्लामिक देशों में स्त्री के मत को "आधा मत" माना जाता है तो तमाम देशों में अभी तक कोई महिला संसद में निर्वाचित होकर पहुंँची ही नहीं है। तमाम विकसित कहे जाने वाले देशों में तो महिलाएँ राष्ट्र प्रमुख की भूमिका से भी कोसों दूर

हैं। निश्चितत: इन सबके विरुद्ध लिंग समता एक प्रतिक्रिया के रूप में उभरी है। इस सबके पीछे एक तत्वमीमांसीय आधार भी सन्निहित है कि सभी में एक ही सत् ईश्वर का वास है अतः असमानता जायज नहीं। विभिन्न देशों ने संवैधानिक उपबन्धों द्वारा नर-नारी असमानता का उन्मूलन कर दिया है। भारतीय संविधान भी किसी विभेद को अस्वीकार करता है।

नारी मुक्ति आन्दोलन से नारी ही प्रथमतः जुड़ी, जिसकी अभिव्यक्ति उसके लेखों, नारों इत्यादि में दिखायी देती है। लिंगीय विभेद के प्रश्न को उठाने वाली प्रथम पाश्चात्य दार्शनिक चिन्तक सिमोन द बोउआर (The second sex -1949) थीं। अस्तित्ववादी विचारों की पोषक बोउआर ने स्त्रियों के विरुद्ध होने वाले अत्याचारों और अन्यायों का विश्लेषण करते हुए लिखा, "पुरुष ने स्वयं को विशुद्ध चित्त (Being-for- itself : स्वयं में सत्) के रूप में परिभाषित किया है और स्त्रियों की स्थिति का अवमूल्यन करते हुए उन्हें "अन्य" के रुप में परिभाषित किया है व इस प्रकार स्त्रियों को "वस्तु" रूप में निरूपित किया गया है। बोउआर का मानना था कि स्वयं स्त्रियों ने भी इस स्थिति को स्वीकार कर लिया। 19वीं सदी की महान नारीवादी ब्रिटिश लेखिका वर्जीनिया वुल्फ की 'ए रूम ऑफ वन्स ओन' से लेकर तस्लीमा नसरीन की 'औरत के हक में', हिंदी लेखिका मैत्रेयी पुष्पा की 'आज की नारी' और प्रभा खेतान की 'बाजार के बीच, बाजार के खिलाफ' जैसी तमाम पुस्तकें नारी विमर्श को बढ़ावा देती हैं। वृंदा करात की 'भारतीय नारी संघर्ष और मुक्ति', इतालवी पत्रकार और लेखिका ओरियाना फेलेसी की 'एक खत अजन्मे बच्चे के नाम', तथा जेस्मिन लोरेंस की 'महिला श्रमिक : सामाजिक स्थिति एवं समस्याएं', ऐलिन मोर्गन की 'नारी का अवतरण' जैसी तमाम पुस्तकें स्त्री समाज के विभिन्न आयामों को उनके परिवेश के साथ प्रतिबिंबित करती हैं और उनका विश्लेषण करती नजर आती हैं। व्यापक सरोकार को समेटे इन तमाम कृतियों के केंद्र में स्त्री का संघर्ष और अस्मिता है। ये न तो नारेबाजी में उतरती हैं, न किसी हवालोक में जाकर कोई आदर्शवादी चित्र प्रस्तुत करने की राह पकड़ती हैं। उनके पास खुद के भोगे गए यथार्थ अनुभव और अपने परिवेश की घटनाओं की पूंजी है, जिससे नारी विमर्श आकार लेता है।

आज जरुरत है नर व नारी के बीच जैविक विभेद से परे सामंजस्य स्थापित करने और तद्नुसार सभ्यता के विकास हेतु कार्य करने की। नारी आन्दोलन मात्र एक पक्ष की आलोचना करके दूसरे पक्ष को मजबूत नहीं बना सकता है। यह सामाजिक स्वास्थ्य के लिए भी स्वास्थ्यप्रद नहीं है। लिंग समानता एक सुसंगत आदर्श है और इसके लिए हमें उन आदर्शों की ओर झांकना पड़ेगा जहाँ से यह शुरु होती है। इस हेतु जरूरी है कि पुस्तकों के स्तर पर लिंग-अभिनति समाप्त किया जाये। स्त्रियों की शिक्षा, प्रशिक्षण, रोजगार व स्वास्थ्य के संबंध में ठोस कदम उठाने के साथ-साथ स्त्रियों में सामाजिक और राजनीतिक जागरुकता व चिन्तन पैदा करने की परम आवश्यकता है। यद्यपि संविधान उन्हें शक्तियाँ प्रदान करता है पर स्त्रियों को इसमें स्वयं सक्रिय भूमिका निभानी होगी तथा हर प्रकार के भेद-भाव, शोषण, अन्याय, अत्याचार व दमन का डटकर मुकाबला करना होगा, तभी स्त्रियों की स्वतन्त्र पहचान बन पायेगी और एक व्यापक रुप में उनका स्वतन्त्र अस्तित्व कायम हो पायेगा । ऐसी ही स्थिति में लिंगीय समानता व्यावहारिक रुप में पूरे विश्व में स्थापित होगी।

नर-नारी सृष्टि रूपी परिवार के दो पहिये हैं। तमाम देशों ने संविधान के माध्यम से इसे आदर्श रूप में प्रस्तुत किया है पर जरुरत है कि नारी अपने हकों हेतु स्वयं आगे आये। मात्र नारी आन्दोलनों द्वारा पुरुषों के विरुद्ध प्रतिक्रियात्मक दृष्टिकोण व्यक्त करने से कुछ नहीं होगा। पुरुषों को भी यह धारणा त्यागनी होगी कि नारी को बराबरी का अधिकार दे दिया गया तो हमारा वर्चस्व समाप्त हो जायेगा। उन्हें यह समझना होगा कि यदि नारियाँ बराबर की भागीदार बनीं तो उन पर पड़ने वाले तमाम अतिरिक्त बोझ समाप्त हो जायेंगे और वे तनावमुक्त होकर जी सकेंगे। आज जरुरत है नारी जाति की उपलब्धियों को पितृसतात्मक समाज में स्वीकार किया जाना और उनकी उपलब्धियों की हर कीमत पर रक्षा करते हुए विस्तार। यह नर-नारी समता का एक सुसंगत एवं आदर्श रूप होगा। ●●●

महाकुंभ-2025 के चर्चित चेहरे

सुभाष चन्द्र श्रीवास्तव

संगम नगरी प्रयागराज में 13 जनवरी को शुरू हुए सनातन आस्था से सबसे भव्य आयोजन महाकुंभ 2025 में अनेक रंग देखने को मिले। इस दौरान देश के कोने-कोने से अलग-अलग वेषभूशा में साधु संत यहां पर पहुंचे। 144 साल बाद महाकुंभ के लिए इस बार कुछ खास संयोग बना था। यही कारण रहे कि आस्था के इस महाकुंभ जाने से अपने आप को नहीं रोक पाया। ऐसे में भारी तादाद में बच्चे, बूढ़े, महिलाएं और नौजवान यहां अपने सगे-संबंधियों संग गंगा स्नान कर पुण्य कमाने के लिए पहुंचे। तो वहीं दूसरी ओर अलग-अलग तरह के महात्माओं के स्वरूप अलग-अलग तरह के अखाड़ा प्रमुख महाकुंभ के रंग में रंगे हुए नजर आ आए। प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ में फिल्म जगत के तमाम सितारे आस्था की डुबकी लगाने में पीछे नहीं रहे। महाकुंभ पहुंचने वाले सितारों की सूची में वेब सीरीज 'आश्रम' फेम अभिनेत्री ईशा गुप्ता का भी नाम शामिल हो चुका है। व्यवस्था को लेकर उन्होंने उत्तर प्रदेश सरकार की सराहना भी की। अभिनेत्री ने कहा, मुझे संगम आकर बहुत अच्छा लग रहा है। यहां यूपी की योगी सरकार ने काफी अच्छी व्यवस्था की है। मैंने सोशल मीडिया पर एक रील देखी थी, जिसमें एक बुजुर्ग महिला खो गई थी। हम बचपन से सुनते आ रहे हैं कि यहां इतनी भीड़ होती है कि लोग यहां आकर खो जाते हैं. मगर सरकार ने इतनी अच्छी व्यवस्था की है कि जो खोए, वे फिर से अपने परिवार को मिल गए।" अभिनेत्री ईशा गुप्ता से पहले पूनम पांडे, किटू गिडवानी, फिल्म निर्माता कबीर खान, कॉमेडियन-अभिनेता सुनील ग्रोवर, गायक-अभिनेता गुरु रंधावा, अविनाश तिवारी, अनुपम खेर, भाग्यश्री, रेमो डिसूजा, सिद्धार्थ निगम, प्रियंका चोपड़ा की मां मधु चोपड़ा, तनीषा मुखर्जी, ममता कुलकर्णी समेत कई मशहूर हस्तियां इस भव्य आध्यात्मिक समागम में भाग ले चुकी थीं।

तो वहीं दूसरी ओर महाकुंभ देश-विदेश से भले की करोड़ों लोग आए हों, जिनमें से लगभग सभी का लक्ष्य अपने पाप धोकर पुण्य कमाने का रहा। लेकिन वहीं कुछ लोग ऐसे भी रहे जो विभिन्न कारणों के चलते सारी दुनिया में चर्चित हो गए। इनमें पहला नाम हैं:- खुद को कट्टर हिंदू सनातनी शेरनी बताने वालीं एंकर हर्षा रिछारिया का, जो पूरे कुंभ के दौरान सोशल मीडिया पर छाई रहीं।

कहा जाता है कि महाकुंभ में सबसे सुंदर साध्वी के नाम से मशहूर हुई हर्षा रिछारिया महाकुंभ में अपने भाई के साथ पहुंची थीं। महाकुंभ में यह जोड़ी भाई-बहन के लिए सिबलिंग गोल सेट करती रही। इसके अलावा हर्षा अपने भाई कपिल रिछारिया के साथ रोजाना कुंभ से अपने इंस्टाग्राम पर वीडियो शेयर करने का काम करती थीं। महाकुंभ में बहन-भाई की जोड़ी लोगों को आस्था का नया पाठ भी पढ़ाती रही। हर्षा और उनके भाई कभी गंगा स्नान करते नजर आए। तो कभी साधु-संतों की शरण में जाकर उनका आशीर्वाद लेते नजर आए। इस बीच हर्षा रिछारिया की आस्था पर भी सवाल उठे। पर कहा जाता है कि वे अपने भाई के साथ महाकुंभ में इसलिए आई कि देश-विदेश में उनका नाम हो और उन्हें एंकरिंग का ज्यादा से ज्यादा कम मिल सके।

ममता कुलकर्णी 24 जनवरी 2025 को अचानक सुर्खियों में आईं, जब प्रयागराज में महाकुंभ के दौरान उन्हें किन्नर अखाड़े की महा मंडलेश्वर चुना गया। कहा जाता है कि पिछले 23 सालों से आध्यात्मिक मार्ग पर चलने के बाद उन्हें यह उपाधि दी गई। ममता कुलकर्णी को नया नाम श्री यमई ममता नंद गिरि दिया गया। ममता कुलकर्णी को फिर से सुर्खियों में देखकर लोगों को कुछ पुरानी यादें ताज़ा हो गईं। वहीं बाद में किन्नर अखाड़ा ने ममता कुलकर्णी महामंडलेश्वर के पद से हटा दिया है। उन पर आरोप लगे कि ड्रग माफिया से उनका नाम जुड़ा हुआ था, सो उसने बचने के लिए उन्होंने दस करोड़ रुपए देकर किन्नर अखाड़े की महा मंडलेश्वर बनने का रास्ता चुना। ताकि उनकी धूमिल हो रही छवि बेदाग हो सके। हालांकि मीडिया से बात करते महामंडलेश्वर बनने के लिए 10 करोड़ रुपए देने के सवाल पर ममता कुलकर्णी ने रिएक्शन दिया और इन सभी खबरों को अफवाह बताया। इंटरव्यू में उन्होंने कहा, मेरे पास 10 क्या मेरे पास 1 करोड़ भी नहीं है। मेरे बैंक अकाउंट सील कर दिए गए है। आपको मालूम नहीं है मैं किस तरह से रह रही हूं। ये आंसू ऐसे नहीं आ रहे हैं। मैंने काफी त्याग किया है। मेरे बैंक अकाउंट सीज हैं। सब सीज है। मेरे पास पैसे नहीं है। ये किसी से उधार लेके 2 लाख गुरु भेट देनी पड़ती है। वो भेट मैंने दी है। टाइम्स ऑफ इंडिया की रिपोर्ट अनुसार, ममता कुलकर्णी ने यह भी बताया कि उनके तीन अपार्टमेंट खराब हालत में हैं। दीमक लग गए हैं और फाइनेंशियल संघर्षों के कारण 23 साल में खोले नहीं गए हैं। ममता ने अपने साध्वी बनने पर बात की और कहा कि उन्होंने 23 सालों में कोई एडल्ट फिल्म नहीं देखी है। अपने इस मुश्किल सफर के बारे में बात करते हुए ममता ने उस कॉन्ट्रोवर्सी का भी खुलासा किया, जब वो नवरात्रि के 9 दिनों का व्रत रखा करती थीं, लेकिन कहा जाता था कि वो दिन में हवन करती हैं और रात में दो पेग ... पीती थीं। वो ताज होटल जाया करती थीं। ये तब की बात है जब बॉलीवुड का हिस्सा थीं, फिल्मों में काम कर रही थीं। इस पर खूब विवाद गहराया था। इस पर ममता ने कहा- जब मैं बॉलीवुड में थी, 1997 में मेरे गुरु मेरी जिंदगी में आए थे। बॉलीवुड में काम करने के दौरान मेरी जिंदगी एक स्ट्रिक्ट रूटीन में चलती थी... जब भी मैं शूटिंग के लिए जाती थी, तो तीन बैग लेकर जाती थी। एक बैग में मेरे कपड़े होते थे, जबकि दूसरे बैग में मेरा पोर्टेबल मंदिर होता था। ये मंदिर मेरे... कमरे में एक टेबल पर बनाया जाता था, जहां मैं काम पर जाने से पहले पूजा करती थी। इस अनुष्ठान को पूरा करने के बाद ही मैं अपने शूटिंग शेड्यूल पर जाती थी।

बहरहाल, हर्षा रिछारिया और ममता कुलकर्णी के साथ कई तरह के विवाद

जुड़े रहे हों, लेकिन वहीं दूसरी ओर महाकुंभ में बिना किसी विवाद के एक और नाम की चर्चा सबसे अधिक रही तो वह है एक वायरल गर्ल मोनालिसा है जिसकी चर्चा और उसकी सादगी ने उसकी किस्मत ही बदल दी। गौरतलब है कि वायरल गर्ल मोनालिसा जो आई थी महाकुंभ में माला बेचने के लिए। लेकिन अपनी आंखों और नेचुरल ब्यूटी की वजह से फेसम हो गईं। पूरे महाकुंभ के दौरान प्रयागराज में ही रुक कर रुद्राक्ष माला बेचने वाली थीं लेकिन 15 दिनों के अंदर ही उन्हें महाकुंभ छोड़ना पड़ा। क्योंकि वायरल होने के कारण न तो वह माला बेचने का अपना काम ठीक से कर पा रहा था और न ही चैन की सांस ले पा रही थी। पूरे वक्त उनके आगे पीछे कैमरे घूमने लग गए थे। कत्थई आंखों वाली मोनालिसा इतनी पॉपुलर हो गईं कि उनको वापस घर लौटकर आना पड़ा। यही नहीं, मोनालिसा जहां यूट्यूब पर एक्टिव हो गई हैं, वहीं उन्हें फिल्म में काम भी मिल गया है। मोनालिसा को डायरेक्टर सनोज मिश्रा अपनी फिल्म में डायरी ऑफ मणिपुर के लिए उनके गांव जाकर साइन किया। इस फिल्म में मोनालिसा लीड भूमिका में नजर आएगी। यह फिल्म मणिपुर के ज्वलंत मुद्दे पर आधारित है। इस फिल्म के जरिए बॉलीवुड स्टार राजकुमार राव के बड़े भाई अमित राव बॉलीवुड में डेब्यू करने जा रहे हैं। बता दें कि सनोज मिश्र ऐसे डायरेक्टर हैं, जो समाज के ज्वलंत मुद्दे पर फिल्म बनाते हैं। चाहे उनकी फिल्म काशी टु कश्मीर हो या फिर द डायरी ऑफ वेस्ट बंगाल हो। उनकी इस फिल्म का काफी विरोध हुआ था। यहां, तक की जान से मारने की धमकियां भी मिली थी। बिनी इसकी परवाह किए सनोज मिश्रा ने फिल्म रिलीज की, जिसे लोगों ने खूब पसंद किया। बॉलीवुड एक्ट्रेस और भाजपा सांसद कंगना रनौत जो अपनी सोच को बेबाकी से सोशल मीडिया के जरिए फैंस के सामने बयां करती रहती हैं। उन्होनें भी मोनालिसा की तारीफ की है।

वहीं जैसा कि सर्वविदित है कि पिछले दिनों केन्द्रीय वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा मोदी सरकार-3 का 2025-26 के लिए पूर्णकालिक बजट पेश किया गया और इस बजट महाकुंभ में राहत रूपी अमृत की बूंदों ने हर किसी को तृप्त किया है। मध्यम वर्ग वालों की बल्ले बल्ले रही। बजट की खास बात यह है कि वित्त मंत्री ने रेहड़ी-पटरी वालों का भी खास ध्यान रखा है। महाकुंभ से वायरल हुई मोनालिसा जैसी सैकड़ों शहरी कामगारों की चिंता बजट में साफ तौर दिखी। वित्त मंत्री ने कहा कि सरकार शहरी कामगारों की सामाजिक-आर्थिक उन्नति के लिए एक योजना लेकर आएगी। शहरी गरीबों की आय बढ़ाने के प्रयास होंगे। स्ट्रीट वेंडरों के लिए चल रही 'प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना- को नया रूप दिया जाएगा। इसके तहत बैंकों और यूपीआई से जुड़े क्रेडिट कार्ड से ऋण की सीमा बढ़ाकर 30,000 रुपये की जाएगी। तो जाहिर तौर पर इन ऐलानों से मोनालिसा और उनके जैसे तमाम लोग खुश तो बहुत हुए होंगे। और अंत में यह कहा जाए तो गलत नहीं होगा कि महाकुंभ 26 फरवरी को शिवरात्रि के पावन पर्व पर हुए स्नान के साथ भले ही समाप्त हो जाएगा लेकिन हर्षा रिछारिया, ममता कुलकर्णी और मोनालिसा की चर्चा लंबे समय तक होती रहेगी।

प्रयागराज भगदड़:

प्रशासनिक लापरवाही या भक्तों का उन्माद

प्रियंका सौरभ

एक पौराणिक शहर की सीमाओं पर विचार करना चाहिए, जिसे अपनी धार्मिक विरासत को बनाए रखते हुए आठ करोड़ लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का काम सौंपा गया है। दस लोगों के लिए डिज़ाइन की गई जगह में सौ लोग कैसे रह सकते हैं? यह विचार करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा है। इसके अलावा, वीवीआईपी संस्कृति और सरकार के मुनाफे की खोज, जिसमें राजस्व के लिए हर उपलब्ध भूमि को पट्टे पर देना और बिचौलियों को शामिल करना शामिल है, के बीच का सम्बंध मामले को और जटिल बनाता है। यह धार्मिक भक्ति का मामला है, प्रतिस्पर्धा या उन्माद का नहीं।

प्रयागराज में हुई भगदड़ के बारे में सुनना दुर्भाग्यपूर्ण है, जिसके परिणामस्वरूप कई लोगों की जान चली गई। यह घटना निस्संदेह विभिन्न मीडिया प्लेटफार्मों पर व्यापक चर्चाओं को जन्म देगी। विपक्ष आलोचना करेगा, जबकि सरकार अपने कार्यों को सही ठहराने का प्रयास करेगी, लेकिन जो लोग मर चुके हैं उन्हें वापस नहीं लाया जा सकता। ऐसा पहली बार नहीं हुआ है। प्रयागराज में संगम तट पर वर्ष 2013 के कुंभ मेले के दौरान 10 फरवरी दिन रविवार को मौनी अमावस्या का स्नान था। कुचलने और गिरने से 35 लोगों की मौत हो गई थी। जबकि दर्जनों लोग घायल हुए थे। जिनका अस्पताल में कई दिनों तक इलाज़ चला था। 1954 में मौनी अमावस्या के दिन नेहरू जी ने संगम में स्नान किया, जो इस मेले का मुख्य आकर्षण था। इस कुंभ मेले के दौरान एक दर्दनाक हादसा भी हुआ। मौनी अमावस्या के स्नान के समय, एक हाथी नियंत्रण से बाहर हो गया और भगदड़ मच गई। इस दुर्घटना में करीब 500 लोग मारे गए।

भगदड़ के बाद भीड़ को नियंत्रित करने और सूचना देने के लिए लाउडस्पीकर्स का इस्तेमाल किया गया। इसके अलावा, रात के समय मेले में रोशनी के लिए 1000 से अधिक स्ट्रीट लाइट्स लगाई गई थीं। इस घटना ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया। इसके बाद, कुंभ मेले में हाथियों के उपयोग पर हमेशा के लिए

रोक लगा दी गई। अपने घर में छोटा-सा कार्यक्रम करिए उसको सकुशल संपन्न कराने में हवा निकल जाती है यहाँ तो पूरा विश्व आया हुआ है करोड़ों की संख्या में। एक पौराणिक शहर की सीमाओं पर विचार करना चाहिए, जिसे अपनी धार्मिक विरासत को बनाए रखते हुए आठ करोड़ लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का काम सौंपा गया है। दस लोगों के लिए डिज़ाइन की गई जगह में सौ लोग कैसे रह सकते हैं? यह विचार करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा है। इसके अलावा, वीवीआईपी संस्कृति और सरकार के मुनाफे की खोज, जिसमें राजस्व के लिए हर उपलब्ध भूमि को पट्टे पर देना और बिचौलियों को शामिल करना शामिल है, के बीच का सम्बंध मामले को और जटिल बनाता है। यह धार्मिक भक्ति का मामला है, प्रतिस्पर्धा या उन्माद का नहीं।

कुछ लोग इसे प्रशासन की नाकामी बता रहे हैं। लिखना और आलोचना करना बहुत आसान है लेकिन जहाँ पर लाखों, करोड़ों लोगों की भीड़ हो ओर उसमें भी बहुत बड़ी संख्या में बुज़ुर्ग हो। घाटों पर जहाँ बड़ी संख्या में श्रद्धालु स्नान कर रहे हो, बड़ी संख्या में श्रद्धालु स्नान करके बाहर निकल रहे हो और बड़ी संख्या में श्रद्धालु संगम स्नान करने जा रहे हों। हादसे की संभावना बनी रहती है और अफ़सोस हादसा हो ही गया। हमेशा याद रखें। प्रशासन एक-एक का हाथ पड़कर स्नान नहीं करवा सकता। हादसा कहीं भी हो सकता है। ना इसमें पूरा प्रशासन का दोष है और ना ही इसे विपक्ष की साज़िश कहा जा सकता है। यह महज़ एक हादसा है। हादसे के बाद पूरे संगम क्षेत्र में स्थिति बिलकुल सामान्य है लेकिन मीडिया अपने टीआरपी के लिए सनसनी पैदा कर रहा है। जबकि मीडिया की जिम्मेवारी है कि वह घटना (भगदड़) की वज़ह की रिपोर्टिंग पर करें।

इसके अतिरिक्त लोग महाकुम्भ में जिस श्रद्धा आस्था के साथ आएँ हैं, उसी श्रद्धा पूर्वक उन्हें कर्तव्यबोध भी रहे। सरकार के नियम, अनुशासन, चेतावनी का उसी आस्था से पालन करे। जब अयोध्या और काशी में आशातीत भीड़ हो गई है तो प्रयागराज में महाकुंभ में सम्मिलित श्रद्धालुओं की संख्या का अनुमान भी नहीं किया जा सकता। सभी लोग त्रिवेणी संगम में ही स्नान के लिए हठ न करें, चालीस किलोमीटर इधर और उधर, यानी अस्सी किलोमीटर तक फैला हुआ स्नान घाट बनाया गया है। वहीं स्नान कर कृपया व्यवस्था में सहयोग बनाएँ।

ऐसा लगता है कि सरकार ख़ुद को सर्वश्रेष्ठ आयोजक के रूप में दिखाने पर केंद्रित है, जबकि कुछ लोग सोशल मीडिया के माध्यम से सनातन को बढ़ावा देने में अधिक रुचि रखते हैं, आम भक्तों की भावनाओं की उपेक्षा करते हैं। ब्रह्म कल्प के दौरान लगभग 45 दिनों तक, शाही स्नान (शाही स्नान) प्रतिदिन होता है, फिर भी हमारे धार्मिक नेताओं ने इसे श्रद्धालुओं तक प्रभावी ढंग से नहीं पहुँचाया है। इन नेताओं द्वारा कुंभ स्नान का वास्तविक महत्त्व जनता को पर्याप्त रूप से नहीं बताया गया है। यदि सनातन धर्म पर चर्चा करने के लिए अक्सर टेलीविजन पर आने वाले धार्मिक व्यक्ति कल्पवास के इन 45 दिनों के दौरान प्रत्येक प्रहर के दौरान स्नान के महत्त्व पर ज़ोर देते, तो भारी भीड़ को अलग-अलग दिनों में फैलाया जा सकता था, जिससे संभावित रूप से ऐसी त्रासदियों को रोका जा सकता था।

अत्यधिक प्रचार के कारण महाकुंभ में बेहिसाब भीड़ जमा हो गई। इसके अतिरिक्त वीआईपी यानी अति विशिष्ट को ज़रूरत से ज़्यादा महत्त्व और आमजन को अनेक रास्तों पर रोकना या वापस भेजना या मोक्ष मार्ग पर अति विशिष्ट के लिए अलग मार्ग भी एक कारण। भगदड़ के लिए बस एक छोटी—सी गलती की ज़रूरत होती है। एक बात और असरदार या धनी लोग द्वारा अपने पैसों के दम पर सामान्य तीर्थयात्रियों का हक़ मार लेना, उनको पीछे धकेल देना। क्या यह पाप नहीं है? क्या गंगाजी इस तरह के पापिओं के पाप धो पाएगी? दिवंगत आत्माओं को शांति मिले।

गाज़ा को लेकर ट्रंप के इरादे शक और सवालों के घेरे में

फरीद वारसी

डोनाल्ड ट्रंप जब पिछले साल नवंबर को अमेरिका के 47 वें राश्ट्रपति चुने गए थे तो तभी इस बात की चर्चाओं ने जोर पकड़ा था कि अमेरिका में ट्रंप की दूसरी पारी शुरु होते ही दुनिया के विभिन्न देशों में काफी कुछ बदलाव होगा। जिसका संकेत डोनाल्ड ट्रंप ने अपने चुनाव प्रचार के दौरान दिया भी था। खासतौर से चीन, कनाड़ा, रुस और यूक्रेन युद्ध व इजरायल व हम्मास के बीच के संघर्ष को लेकर कहा जा और सुना जा रहा था कि इसको लेकर अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप क्या कर सकते हैं। बहरहाल, विगत 20 जनवरी को राष्ट्रपति पद की शपथ लेते ही डोनाल्ड ट्रंप ने अपने दूसरे कार्यकाल की शुरुआत बहुत ही आक्रमक ढंग से कर सारी दुनिया को हैरान कर दिया। वहीं शपथ लेने से पहले ही उन्होंने इजरायल और हम्मास के बीच बीते 15 महीनों से चले आ रहे संघर्श को खत्म कर दोनों के बीच युद्ध विराम कराने की न सिर्फ पटकथा लिखी, बल्कि उस पर इजरायल और हम्मास दोनों से अमल करवाते हुए पश्चिम एशिया सहित सारी दुनिया को राहत प्रदान की। विदित हो कि इजरायल और हम्मास के बीच युद्ध विराम विगत 19 जनवरी से लागू होने के साथ एक दूसरे के बंधकों को छोड़ने की प्रक्रिया जारी है। तभी यह सवाल तेजी से उभरा था कि इजरायल और हम्मास के बीच युद्ध विराम हो जाने के बाद गाजा पर वास्ताविक नियंत्रण किसका होगा? और अब डोनाल्ड ट्रंप ने इसका खुलासा कर एक बार फिर पश्चिम एशिया सहित सारी दुनिया को हैरान करने का काम किया।

गौरतलब है कि गाजा को लेकर अपनी योजना का

खुलासा और उस पर अमल करने के इरादे से अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बीते दिनों इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू व्हाइट हाउस बुलाया था। इस दौरान डोनाल्ड ट्रंप जो करने वाले थे उसका अंदाजा किसी को भी नहीं था। यहां यह बताते चलें कि नेतन्याहू दुनिया के वो पहले नेता हैं जिन्हें राष्ट्रपति बनने के बाद ट्रंप ने पहली बार अमेरिका बुलाया है। लेकिन नेतन्याहू से मिलने के बाद डोनाल्ड ट्रंप ने जो ऐलान किया है उसने गाजा के लोगों पर बिजली गिराने का काम किया। ट्रंप नेतन्याहू के साथ पत्रकारों के सामने आए और ऐलान कर दिया कि अब गाजा पट्टी पर अमेरिका का नियंत्रण होगा। यानी एक तरीके से अमेरिका ने अब ऐलान कर दिया है कि गाजा पर अब उसका कब्जा होगा। ट्रंप ने कहा है कि गाजा में फिलिस्तीनियों का कोई भविष्य नहीं है। उन्हें कहीं और चले जाना चाहिए। ट्रंप का ऐलान सुनते ही वहां बैठे पत्रकार भौचक्के रह गए। किसी ने उनसे पूछा कि आप ये कैसे कर सकते हैं? किसी ने कहा कि गाजा तो फिलिस्तीनियों का घर था, फिर मुस्कुराते हुए डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि गाजा पर फिलहाल तो अमेरिका का अधिकार होगा।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने गाजा पर बयान देकर एक नए विवाद को जन्म दे दिया है। ट्रंप ने गाजा को विनाश और मौतों का प्रतीक बताया है। उन्होंने कहा कि गाजा के लोग वहां केवल इसलिए जाना चाहते हैं कि उनके पास कहीं और जाने का विकल्प नहीं है। उन्होंने कहा है कि वो गाजा को अपने कब्जे में लेकर उसे फिर से बसाना चाहते हैं और वहां लोगों के लिए नौकरियां पैदा करना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि गाजा का पुनर्निर्माण होने तक वहां से लोगों को हटाकर किसी दूसरे अरब

देश में भेज देना चाहिए। ट्रंप ने यह बयान तब दिया जब इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू उनके साथ थे। ऐसा नहीं है कि ट्रंप ने गाजा को लेकर पहली बार इस तरह की बात कही है. दूसरी बार राष्ट्रपति पद की शपथ लेने के बाद से ही वो गाजा को लेकर इस तरह के बयान दे रहे हैं। कुछ पहले ही उन्होंने कहा था कि गाजा के लोगों को जॉर्डन और मिस्र में बसा दिया जाना चाहिए।

नेतन्याहू की मौजूदगी में ट्रंप ने अमेरिका के फिलस्तीन-इजरायल विवाद के समाधान के द्वि-राष्ट्र के आधिकारिक स्टैंड के खिलाफ भी बयान दिया। उन्होंने कहा कि उनके इस बयान का दो राष्ट्र, एक राष्ट्र या किसी भी राष्ट्र से कोई मतलब नहीं है। उन्होंने कहा कि यहां लोगों को कभी जीने का मौका नहीं मिला। यहां यह बताते चलें कि ट्रंप के शपथ लेने से पहले उनके पूर्ववर्ती राष्ट्रपति जो बाइडेन के द्वि-राष्ट्र के सिद्धांत का समर्थन करते रहे।

वहीं दूसरी ओर गाजा को लेकर ट्रंप की योजना को हमास ने नकार दिया है। उसका कहना है कि ट्रंप का यह प्रस्ताव इलाके में अराजकता और तनाव पैदा करने का फार्मूला है। उसका कहना है कि उसके लोग गाजा पट्टी में इन योजनाओं को नहीं लागू होने देंगे। हमास का कहना है कि गाजा पर कब्जे और आक्रामकता को खत्म करने की जरुरत है न कि उनकी ही जमीन से उन्हें हटा देने का हमास का कहना है कि गाजावासियों ने 15 महीने से अधिक समय से बमबारी के दौरान विस्थापन और उन्हें वहां से हटाने की योजना को विफल कर दिया है। वहीं अन्य अरब देशों की बात करें तो मिस्र, जॉर्डन, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, कतर, फलस्तीनी प्राधिकरण और अरब लीग इससे पहले ट्रंप के इसी तरह के एक बयान को खारिज कर दिया था। अरब देशों ने गाजा के लोगों को मिस्र और जॉर्डन में बसाने की योजना को खारिज करते हुए कहा था वे फिलस्तीनियों को गाजा और कब्जे वाले

वेस्ट बैंक से हटाने की किसी भी योजना को खारिज करते हैं। उस समय ट्रंप ने कहा था कि जॉर्डन और मिस्र को गाजा के बेघर लोगों को अपने यहां लेना चाहिए। उन्होंने कहा था कि गाजा से करीब डेढ़ करोड़ लोगों को वहां से हटा देना चाहिए, जिससे हम उस जगह को पूरी तरह साफ कर सकें। ट्रंप की इस योजना की आलोचना करने वालों में कुछ यूरोपीय देश भी शामिल थे। इसमें जर्मनी सबसे आगे था। जर्मनी के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने बर्लिन में मीडिया से कहा था कि गाजा से फिलस्तिनियों को नहीं हटाया जाना चाहिए और गाजा पर इजरायल का स्थायी कब्जा भी नहीं होना चाहिए। ट्रंप के प्रस्ताव का विरोध करने वालों में इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी भी शामिल हैं। हालांकि उन्होंने ट्रंप के गाजा के पुनर्निर्माण की योजनाओं का समर्थन किया था।

वहीं इससे पूर्व डोनाल्ड ट्रंप के आने से ठीक पहले ही इजरायल और हमास ने एक युद्धविराम समझौते पर दस्तखत किए थे। यह समझौता 19 जनवरी को लागू हुआ था। इस समझौते के लिए अमेरिका के अलावा कतर और मिस्र ने मध्यस्थ की भूमिका निभाई थी। समझौते को जो बाइडेन प्रशासन के विदेश नीति की बहुत बड़ी जीत के रूप में देखा गया था। ट्रंप के इस बयान के बाद अब इस युद्ध विराम समझौते पर भी खतरे के बादल मंडरा रहे हैं। इजरायल-हमास के इस 42 दिनों के संघर्ष विराम में 33 इजरायली बंदियों और करीब दो हजार फिलस्तीनी कैदियों की रिहाई होनी है। इसकी समय सीमा एक मार्च को खत्म हो रही है। हालांकि ट्रंप सत्ता संभालने के बाद से ही इस समझौते की स्थितरता को लेकर आशंका जताते रहे हैं। वो इसका श्रेय लेने में भी पीछे नहीं रहे हैं। युद्धविराम समझौता लागू होने के बाद से ही सबसे बड़ा अनुत्तरित सवाल यही है कि गाजा पर नियंत्रण किसका होगा। इजरायल बहुत पहले से ही कहता रहा है कि वह गाजा पर फिर हमास को शासन करने नहीं देगा। वह हमास को गाजा से उखाड़ फेकेगा। समझौते की घोषणा के बाद फिलस्तीन के प्रधानमंत्री मोहम्मद मुस्तफा ने कहा था गाजा पर शासन का पहला अधिकार फिलस्तीनी प्राधिकरण का है। लेकिन इजरायल गाजा पर फिलस्तीनी प्राधिकरण के शासन के खिलाफ भी है। वह इसे प्राधिकरण की बढ़ते ताकत के रूप में देखता है। यह प्राधिकरण इजरायल के कब्जे वाले वेस्ट बैंक पर कुछ सीमित अधिकारों के साथ शासन करता है। कहा यह भी जाता है कि इजरायल गाजा पर शासन के लिए एक निकाय बनाना चाहता है। इसके लिए वह अमेरिका और कतर के साथ काम कर रहा है। लेकिन ट्रंप के ताजा बयान ने इस अनिश्चितता को और बढ़ा दिया है कि गाजा पर शासन किसका होगा।

जाकी रही भावना जैसी...

डा0 आकांक्षा दीक्षित

बाबा तुलसी पांच सौ बरस पहले लिखकर चले गए कि 'जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत तिन देखी तैसी' वैसा ही कुछ हाल महाकुंभ का है। देवों और असुरों ने तो एक बार सागर मंथन किया, यहां देव कम दानव अधिक, दैनिक रुप से कुंभ मंथन में रत है। यूट्बियों और रीलियों की रेलमपेल है। इनको हर जगह कंटेट दिखाई पड़ रहा है, बस मुसीबत ये है कि इनकी थैली है छोटी सी, और कंटेट है कि सुरसा के मुंह की तरह खत्म ही नहीं हो रहा। देश-विदेश के करोड़ो प्राणी जहां उपलब्ध हों, वहां कंटेट की कमी हो भी कैसे सकती है। बस हो इतना रहा है कि चीजें अपनी पात्रतानुसार खोजी और दिखाई जा रही हैं। कोई परिवार सहित पुण्य लूटने आया है, तो कोई मात्र उत्सुकतावश। बालक वृन्द उत्साह में मेला घूम रहे हैं, तो जिह्वासुख खोज रहे भंडारों का आनंद ले रहे हैं। पूरब के इस आक्सफोर्ड के सैकड़ो विद्यार्थियों का आर्यावर्ते जम्बू द्वीपे संगम क्षेत्रे के सेक्टर-सेक्टर का भ्रमण इन्हीं भंडारों को एक्सप्लोर करने में हो रहा है। तकनीक का समुचित उपयोग भी ये टेक्नोसेवी प्रजाति कर रही है कि फलां सेक्टर में फलां आश्रम का भंडारा बहुत ही आनंददायक है। खबर निकली नहीं कि लोकेशन तक शेयर कर दी जाती है और मोटरसाइकिलों पर तीन-तीन या चार-चार भी सवार इसका आनंद लेने चल पड़ते हैं। खैर ये तो बालक हैं, इनको सब क्षम्य है और भंडारा तो होता ही इसी प्रयोजन से है कि कोई भूखा ना रहे, सभी संतृप्त रहें। कुछ इस महाकुंभ में इस कौतूहल में सम्मिलित हैं कि ये करोड़ों लोग झुंड के झुंड यहां पूरी श्रद्धा से उपस्थित हैं। कुछ तो अपने नोटबुक, लैपटॉप, मंहगे कैमरे आदि लेकर इस बात से अचंभित हैं कि बीसियों देशों की कुल जमा जनसंख्या बराबर लोग यहाँ रोजाना ठंडे जल में स्नान कर रहे हैं। यही नहीं माघ माह यानि जनवरी की कड़ाके की ठंड में भी घाट के घाट भरे हुए हैं। किसी को अस्सी बरस की दादी की कहानी जो अजादी के पहले से लगातार कुंभ नहा रही हैं, रोमांचित कर रही हैं तो किसी को अपार भीड़ का अनुशासन। कहीं कोई झगड़ा नहीं, कहीं कोई द्वन्द्व नहीं। जिधर निकल पड़ो उधर

कहीं भागवत का भक्तिपूर्ण ज्ञान वातावरण को भक्तिमय बना रहा है तो कहीं भजन चल रहे है, कहीं धार्मिक साहित्य के पंडालों में भीड़ उमड़ी पड़ रही है, तो कहीं साधू-महात्मा ज्ञान की बातें बता रहे हैं। कहीं आई•आई• टी जैसे संस्थान के इंजीनियर डिग्रीधारी भी आध्यात्मिक उन्नति को अपना परम लक्ष्य मानकर सन्यस्त हो चुके हैं। कहीं दीक्षा समारोह चल रहे हैं तो कहीं मोक्ष प्राप्ति की आकांक्षा लिए डुबकियां लगाई जा रही हैं।

इन सब धर्म प्रिय सरल लोगों के इतर एक प्रजाति और है जिसका आविर्भाव अभी कुछ वर्षो पूर्व ही हुआ है। पहले इसे टिकटाकिया नाम दिया गया था, टिकटाॅक बैन होने के बाद इस वायरस से ग्रस्त टिकटाकियों ने इसे अब महामारी एकसमान फैला दिया है। ऐसा नहीं है सभी रीलजीवी और इंस्टाग्रामसेवी दुरुपयोग ही कर रहे हैं, परन्तु सार्थक कंटेट वालों की संख्या ऊंट के मुंह में जीरे के सदृश ही है। ऐसा समझ लीजिए कि जैसे बंदर के हाथ में तलवार दे दो तो क्या कर दे, इसका अनुमान हम तो क्या बंदर खुद नहीं लगा सकता, उसी प्रकार मोबाइल और तकनीक के साथ आए फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सअप का ये प्रजाति क्या उपयोग करेगी, ये पूर्वानुमान लगाना लगभग असंभव है। देखे गए को कैसे दिखाना है, ये इनका मौलिक योगदान रहता है। कभी-कभार तो एडिटिंग और ए आई का कमाल कुछ ऐसा परिणाम उपस्थित कर देता है जिसकी कल्पना भी संभवतः नहीं की जा सकती। ये प्राणी भी इसी धरा के भूषण हैं सो कुंभ में भी पधारे हैं। कोई माला बेचने वाली सुंदर सी कन्या के पीछे कैमरा लेकर भाग रहा है तो कोई उसकी बहन का ही साक्षात्कार लेने में संतुष्ट है। बेचारी भोली सी लड़की इनके भय से नकाब पहने मेला घूम रही है। वहीं कोई अपने परिवार के साथ आए सरल यात्रियों का उपहास कर रहा है, तो कोई वृद्ध धार्मिक महिलाओं के पीछे कैमरा लिए जुटा पड़ा है। कहां आए हो, किसलिए ये आयोजन है अभी इनसे पूछ लिया जाए तो यू नो, आई नो, ये सब माइथलॉजी है, कहकर पल्ला झाड़ लेते है। कुछ दृश्य आनंददायक भी है। कहीं मसखरी कर रहे ऐसे ही एक प्राणी को साधू बाबा ने चिमटासेवा प्रदान की। बाबा लोगों को अंडरस्टीमेंट करना भारी पड़ सकता है, ये ज्ञान अब हो चला है काहे से बाबा लोग आत्मनिर्भर हैं, शास्त्र भी जानते है और दुर्बुद्धियों की बुद्धि का इलाज करना भी।

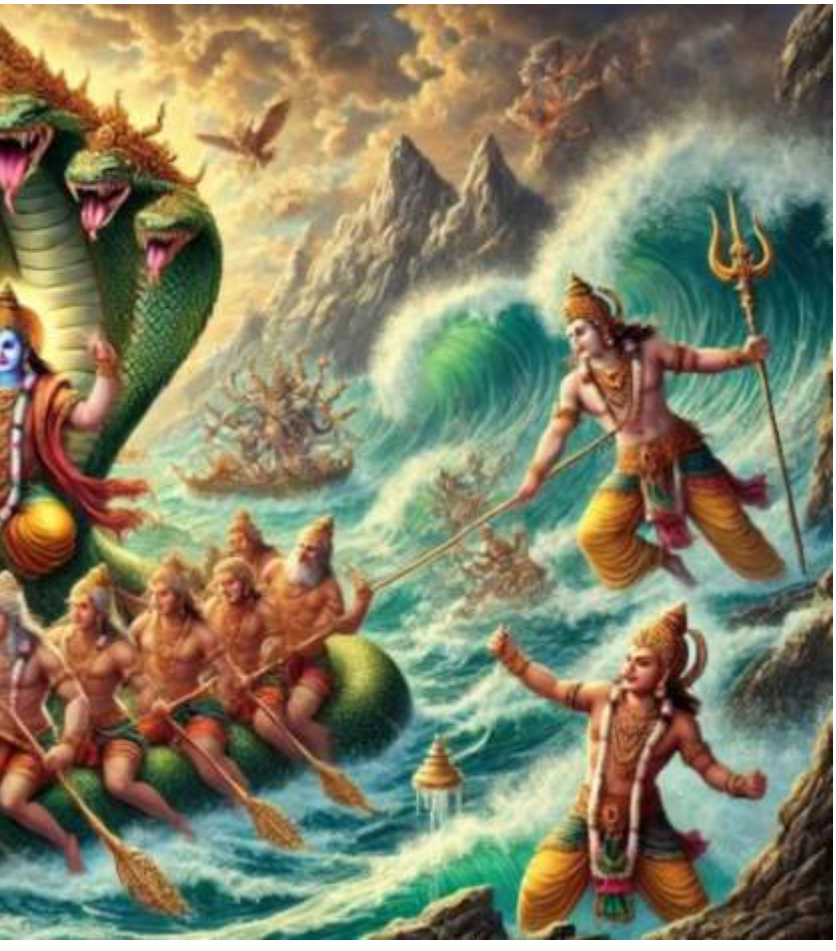

इन सबके बीच सुदूर देशों के वे आस्थावान जन भी है जो इस संगम में डुबकी लगाकर अपने जीवन को सार्थक समझ रहे हैं। बारह पूर्णकुंभ के बाद आया यह महाकुंभ अद्भुत तो है ही। निष्कर्ष यही है कि श्रद्धा भाव ही यहां अपेक्षित है इसीलिए जैसी जिसकी भावना है उसको वैसा ही अनुभव हो रहा है।

आईसीसी से सम्मान मिलना रोहित और बुमराह के लिए गर्व की बात

कुशाग्र सिंह

कोई भी क्षेत्र हो या फिर हमारी आपकी निजी जिंदगी ही क्यों न हो, अच्छा बुरा दौर और उतार-चढ़ाव आना जीवन की एक प्रक्रिया है और यही बात क्रिकेट और उसके खिलाड़ियों पर भी लागू होती है। कहा जाए तो गलत न होगा कि हिटमैन के नाम से मशहूर कप्तान रोहित शर्मा इसके सबसे बड़े उदाहरण हैं। विदित हो कि अपने बल्ले से बड़े से बड़े गेंदबाजों के पसीने छुडाने वाले रोहित शर्मा बीते काफी समय से अपने अब तक के सबसे बुरे दौर से गुजर रहे है। क्या वे अपनी शानदार वापसी करेंगे, इसके लिए हम सबको अगले महीने होने वाली चैपिंयन ट्रॉफी का इतंजार करना होगा। बहरहाल जैसा कि उल्लेखनीय है कि काफी बुरे दौर से गुजर रहे टीम इंडिया के टेस्ट एवं एक दिवसीय मैचों के कप्तान रोहित शर्मा को टी-20 टीम ऑफ द ईयर चुने जाने की खबर आई, तो इस बात ने उनके चाहने वाले करोड़ों भारतीय फैंस को गौरव से भर दिया। जबकि एक बड़े वर्ग को यह थोड़ा अजीब सा भी लगा क्योंकि भारतीय टेस्ट कप्तान इन दिनों बहुत ही बुरी फॉर्म में चल रहे हैं। पिछले दिनो टेस्ट सीरीज में ऑस्ट्रेलिया के हाथों हार झेलनी पड़ी, तो हालिया रणजी ट्रॉफी मैच की दोनों पारियों में भी उनका बल्ला कुछ खास नहीं बोला। बहरहाल, इस खबर पर रोहित के प्रति लोगों अपना नकारात्मक रवैया खत्म करना होगा और वही नजरिया अपनाना होगा, जो क्रिकेट की जानी-मानी संस्था अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट काउंसिल यानि आईसीसी आई ने अपनाया और रोहित शर्मा को वह प्रदान किया, जिस पर उनका पूरा-पूरा हक था। जैसा कि उल्लेखनीय है कि आईसीसी ने अपनी पिछले साल टी-20 टीम ऑफ द ईयर का ऐलान कर दिया है और रोहित शर्मा इसके कप्तान चुने गए हैं। रोहित की कप्तानी में भारत ने टी-20 का वर्ल्ड कप जीतने में सफलता हासिल की थी। यही कारण है कि टी-20 टीम ऑफ द ईयर के लिए कप्तान के तौर पर रोहित शर्मा का चयन किया गया है। इस दौरान आईसीसी ने कहा कि रोहित के कुशल नेतृत्व ने दबाव भरी विपरीत स्थितियों में युवा टीम इंडिया का मार्ग दर्शन करने में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इससे उन्होंने भारत के सबसे महान टी-20 अतंरराष्ट्रीय कप्तानों में से एक के तौर पर अपनी विरासत को कायम करते हुए उसे मजबूत किया। वहीं, इस टीम में हार्दिक पांड्या, जसप्रीत बुमराह और अर्शदीप सिंह को भी जगह मिली है, तो पाकिस्तान के स्टार बल्लेबाज बाबर आजम को भी टी-20 टीम ऑफ द ईयर में चुना गया है। गौरतलब है कि पिछले साल जून में टी-20 विश्व कप का आयोजन अमेरिका और वेस्टइंडीज में सयुंक्त रूप से हुआ था।

जहां तक रोहित शर्मा का सवाल है तो क्रिकेट से जुडे जानकारों का मानना है कि वास्तव में रोहित इस सम्मान के पूरे हकदार थे। भले ही इस समय उनका समय बहुत ही खराब चल रहा हो, लेकिन पिछले साल टी-20 विश्व कप में उन्होंने कप्तान और बतौर बल्लेबाज बहुत ही उम्दा प्रदर्शन किया था। रोहित शर्मा ने 11 मैचों में 42.00 के औसत से 378 रन बनाए। उनकी परफॉरमेंस, कप्तानी, भारत की खिताबी जीत मिली वोट और तमाम एक्पर्ट की राय ने आईसीसी को रोहित शर्मा को कप्तान चुनने पर मजबूर कर दिया। रोहित शर्मा के लिए टी-20 विश्व कप असाधारण

रहा और इसकी यादें कोई भी भारतीय कभी नहीं भुला पाएगा। रोहित शर्मा ने इस बड़े आयोजन में तीन अर्द्धशतक जड़े, तो ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ भारतीय कप्तान ने सुपर-8 राउंड में 92 रन की यादगार पारी खेली। यह जीत टीम इंडिया का मनोबल बढ़ाने में बहुत ही अहम साबित हुई।

कप्तान रोहित शर्मा के नेतृत्व में टीम इंडिया ने यह खिताब जीतकर भारत का आईसीसी ट्रॉफी का 11 साल का सूखा खत्म किया था। खिताबी जीत में भारतीय पेस अटैक का खासा योगदान रहा था। और यही वजह रही कि हार्दिक पांड्या, अर्शदीप सिंह और जसप्रीत बुमराह की तिकड़ी को इस आईसीसी टी-20 टीम ऑफ द ईयर में जगह मिली है। टी-20 टीम ऑफ द ईयर में चुने गए और रोहित की तरह बुम-बुम बुमराह और अर्शदीप सिंह के नाम की भी धूम रही। टी-20 के विश्व कप में रोहित ने इन दोनों का शानदार इस्तेमाल किया था। बायें हाथ के अर्शदीप सिंह और बुमराह ने मिलकर पिछले साल 18 मैचों में 36 विकेट आपस में बांटे, जो इन दोनों के दबदबे और एक नई जोड़ी के बारे में साफ बताता है। इन दोनों की सफलता में रोहित के नेतृत्व और फैसलों का भी अच्छा योगदान रहा। लेकिन टी-20 विश्व कप के फाइनल में साउथ अफ्रीका के साथ हुए मुकाबले में मैच जिताऊ पारी खेलने के बावजूद पूर्व कप्तान विराट कोहली को टीम में जगह नहीं मिली। यहां यह बताते चलें कि विश्व कप के बाद रोहित शर्मा, विराट कोहली के साथ-साथ रवींद्र जडेजा ने भी इस टी-20 के क्रिकेट को अलविदा कह कर इस प्रारुप से अपनी शानदार विदाई की थी। वहीं, हैरानी की बात यह है कि फाइनल में पहुंचने वाले दक्षिण अफ्रीका टीम के भी किसी खिलाड़ी को टीम में नहीं चुना गया है। और न ही इस प्रारुप में दुनिया के नंबर एक बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव को ही टीम में जगह मिल सकी है। जो वर्तमान समय में टीम इंडिया के टी-20 मैचों के कप्तान है। तो वहीं दूसरी ओर इस टीम में अफगानिस्तान के राशिद खान और श्रीलंका के वैनिंदु हसारंगा के रूप में दो विशेशज्ञ स्पिनरों को टीम में चुना गया है, तो जिंबाब्वे के सिकंदर रजा इकलौते ऑलराउंडर हैं।

आईसीसी द्वारा घोषित टी-20 टीम ऑफ द ईयर की टीम कर अगर बात करें तो वह इस प्रकार है-

रोहित शर्मा (कप्तान) ट्रैविस हेड ,फिल सॉल्ट, बाबर आजम, निकोलस पूरन (विकेटकीपर), सिकंदर रजा, हार्दिक पांड्या, राशिद खान, वैनिंदु हसारंगा, जसप्रीत बुमराह और अर्शदीप सिंह।

अब बात टीम इंडिया के बूम-बूम बुमराह की तो आईसीसी की तरफ से टीम इंडिया के स्टार तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह को एक खास सम्मान से नवाजा गया है। 2024 में बेहतरीन प्रदर्शन के लिए उन्हें आईसीसी टेस्ट क्रिकेटर ऑफ द ईयर का अवॉर्ड दिया गया है। अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद की तरफ से मिले इस खास उपलब्धि के बाद बुमराह ने भी अपनी भावनाएं जाहिर की हैं। उनका कहना है यह पुरस्कार पाना उनके लिए बेहद खास और गर्व की बात है। 31 वर्षीय तेज गेंदबाज ने कहा, आईसीसी पुरुष टेस्ट क्रिकेटर ऑफ द ईयर का पुरस्कार पाना मेरे लिए बेहद गर्व और सम्मान की बात है। टेस्ट क्रिकेट हमेशा मेरे दिल के करीब रहा है। इस मंच पर पहचान मिलना मेरे लिए बेहद खास है। यह पुरस्कार सिर्फ मेरे प्रयासों का नहीं, बल्कि मेरी टीम, कोच और फैंस के विश्वास का भी नतीजा है। भारत का प्रतिनिधित्व करना मेरे लिए एक विशेष सम्मान है और यह जानकर कि मेरे प्रयास दुनियाभर के लोगों के चेहरे पर मुस्कान लाते हैं। मेरे सफर को और भी खास बनाता है। पिछले साल जसप्रीत बुमराह का लाल गेंद से क्रिकेट में जलवा रहा। टीम के लिए उन्होंने महज 13 मुकाबलों में 14.92 की औसत से 71 विकेट चटकाए। यही नहीं हाल ही में संपन्न हुई बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी पर जरुर टीम इंडिया अपना कब्जा नहीं जमा सकी, लेकिन पूरी सीरीज के दौरान बुमराह का जलवा रहा। उन्होंने टीम के लिए 32 चटकाए। मगर इसके बावजूद टीम इंडिया बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी खिताब को अपने नाम नहीं कर सकी।

बुमराह देश के लिए आईसीसी टेस्ट क्रिकेटर ऑफ द ईयर का पुरस्कार पाने वाले छठवें खिलाड़ी बन गए हैं। उनसे पहले इस खास उपलब्धि को 2004 - राहुल द्रविड़, 2009 - गौतम गंभीर, 2010 - वीरेंद्र सहवाग, 2016 - रविचंद्रन अश्विन, 2018 - और विराट कोहली ने हासिल किया था।

वहीं इसके अतिरिक्त बूम-बूम बुमराह के लिए आईसीसी पुरस्कारों में डबल धमाल रहा। पहले तो उन्हें आईसीसी द्वारा श्रेष्ठ क्रिकेटर चुना गया और बाद में उन्हें आईसीसी के ही द्वारा साल के श्रेष्ठ क्रिकेटर के लिए सर गैरफील्ड सोबर्स पुरस्कार के लिए भी चुना गया। यह सम्मान पाने वाले बुमराह भारत के पहले तेज गेंदबाज है। जबकि इससे पहले जिन भारतीय खिलाड़ियों को यह सम्मान मिला है वे हैंः - राहुल द्रविड़ 2004, सचिन तेन्दुलकर 2010, आर. अश्विन 2016 और विराट कोहली को दो बार 2017 व 2018 में सर गैरफील्ड सोबर्स सम्मान पुरस्कार मिल चुका है।

●●●

इजरायल-हमास के बीच युद्ध विराम

नेतन्याहू के लिए कहीं घाटे का सौदा तो नहीं?

फरीद वारसी

करीब चौदह महीने तक चले निराशा, भीषण नरसंहार और भयानक मानवीय तबाही के बाद अगर शांति मिले तो इसे स्वीकार करते हुए इजरायल और हम्मास को नए भविश्य के निर्माण के लिए आगे बढ़ने की जरूरत है। यहां यह बताते चले कि एक तरफ जब अमेरिका में नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड टंरप के शपथ समारोह की तैयारियां चल रही थी तो इसी बीच पश्चिम एशिया सहित सारी दुनिया के लिए एक राहत भरी खबर आई। अमेरिका और कतर ने घोषणा की कि इजरायल और हमास युद्ध विराम के लिए सहमत हो गए हैं। ऐसे में यह कहा जाए तो गलत नहीं होगा कि न सिर्फ पश्चिम एशिया के लिए वरन, सारे विश्व के लिए शुभ संकेत है कि इजरायल और हम्मास के बीच भले ही देर से ही सही लेकिन युद्ध विराम का समझौता हो गया। और इसी के साथ गाजा में अमन का नया आगाज शुरू हो गया। जैसा कि उल्लेखनीय है कि उपरोक्त दोनों के बीच युद्ध विराम का समझौता हो गया है, इसके बाद भी भले ही छिटपुट घटनाएं होती रहें, लेकिन बड़ी जंग के आसार अब खत्म हो गए हैं। ऐसे में जरूरत इस बात की है कि दुनिया की तमाम बड़ी ताकतें इजरायल और हम्मास के बीच स्थाई हल का कोई ऐसा मार्ग निकाले जो दोनों के लिए हितकारी हो। मालूम हो कि अमेरिका और कतर की मध्यस्थता में कई महीने चली वार्ता के चलते ऐसा मुमकिन हुआ। कहा जा रहा है कि इजरायल और हमास के बीच हुए इस समझौते के लिए ट्रंप के बाद कतर के प्रधानमंत्री शेख मोहम्मद बिन अब्दुल रहमान अल थानी की भूमिका सबसे अहम मानी जा रही है। उन्होंने इस समझौते को लेकर एक बयान भी दिया है। इस बात को खुद इजरायल और हमास ने भी साझा किया है। इजरायल और हमास के बीच हुआ यह समझौता तीन चरणों वाला होगा। इसमें युद्ध को रोकने के साथ-साथ कैदियों की अदला-बदली और युद्ध में तबाह हुए गाजा का पुनर्निर्माण भी शामिल है। इस समझौते को अभी इजरायल के कैबिनेट की मंजूरी मिल गई। अब यह बात अलग है कि मंजूरी मिलने के बाद इजरायल ने गाजा पर हमला नहीं रोका है। इजरायल द्वारा गाजा पर किए गए हमले में 80 से अधिक लोग मारे गए हैं। इस बीच एक बड़ा सवाल अभी भी है, जिसका उत्तर आना बाकी है, वह यह कि गाजा को चलाएगा कौन? इस बीच दूसरा सबसे बड़ा सवाल यह है कि इस युद्ध विराम समझौते के तीनों चरण के पूरा होने के बाद गाजा पर नियंत्रण किसका होगा? इजरायल पहले ही हमास के खात्मे की बात कर चुका है। वह कह चुका है कि गाजा में हमास का कोई भी हस्तक्षेप उसे स्वीकार नहीं होगा। हमास का 2007 से गाजा पर नियंत्रण है। वह गाजा में फिलस्तीन प्राधिकरण के शासन के भी खिलाफ है। यह प्राधिकरण करीब तीन दशक पहले हुए ओस्लो समझोते के तहत वेस्ट बैंक में सीमित शक्तियों वाली सरकार चला रहा है। वेस्ट बैंक पर इजरायल का शासन है। इजरायल युद्ध खत्म होने के बाद भी गाजा पर अपना सैन्य नियंत्रण चाहता है, जिससे हमास को फिर से पनपने का मौका न मिल सके। इसलिए वह अमेरिका और कतर से गाजा को चलाने के लिए एक अस्थायी प्रशासन पर चर्चा कर रहा है। तो क्या इसके लिए हम्मास सहमत होगा, सवाल यह भी है।

विदित हो कि 7 अक्टूबर 2023 को हमास के इजरायल पर हमले से यह जंग शुरु हुई थी। इसमें 1,200 इजरायली मारे गए और 250 बंधक बना लिए गए। इजरायली ने जवाबी कार्रवाई में गाजा पर हमला किया जिसमे अब तक 46,900 फलस्तीनी मारे जा चुके हैं। वहीं 20 लाख से ज्यादा बेघर हुए और 50 हजार से ज्यादा बच्चे गंभीर कुपोषण का शिकार है। हमास ने इजराइल की चार महिला सैनिकों को रिहा कर दिया है। इसके बदले इजराइल ने भी 200 फिलिस्तीनियों को छोड़ दिया है। हालांकि कहा जा रहा है कि ये फैसला इजरायल को काफी मंहगा पड़ा है। चार इजराइली महिला सैनिकों के बदले 200 कैदियों को छोड़ना इजराइल के लिए घाटे का सौदा साबित हुआ है। कहा जा रहा है कि इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू पर इजरायली बंधकों को छुड़ाने का दवाव था। बीते 15 महीनों में इसाइल में इसके लिए 900 से ज्यादा प्रदर्शन हुए। गाजा में जंग लड़ते हुए इजरायली सेना भी थक चुकी थी। उसकी आर्थिक स्थिति भी बिगड़ गई और महंगाई भी बढ़ रही है। अमेरिका में ट्रंप के राष्ट्रपति चुनाव जीतने के बाद इजरायली पर सीजफायर का दवाव और बढ़ गया था। गाजा की 90 फीसदी आबादी विस्थापित हो चुकी है। लेबनान, सीरिया, यमन और इराक तक इस संघर्ष की चपेट में आ चुके हैं और इस बात का डर लगातार बना रहा कि कहीं इजरायल और ईरान में सीधा युद्ध न शुरु हो जाए। स्वाभाविक ही शांति की यह संभावना न केवल मध्यपूर्व के लिए बल्कि पूरी दुनिया के लिए राहत

बनकर आई है।

वहीं जानकारों का मानना है कि इस सहमति के पीछे अमेरिका की भूमिका तो है ही, नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का इसमें निजी दिलचस्पी लेना भी खासा महत्वपूर्ण साबित हुआ है। उन्होंने पहले ही चेतावनी जारी कर दी थी कि उनके पद ग्रहण करने से पहले बंधक छोड़ दिए जाने चाहिए। युद्धविराम पर हुए युद्धविराम समझौते में कुछ ऐसे बिंदु थे, जिनसे नेतन्याहू सहमत नहीं थे। जिसके बाद ट्रंप के दूत के साथ हुई बैठक में यह सब तय हो गया, क्योंकि यह एकतरफा था। नेतन्याहू को बोलने का समय नहीं मिल पाया। कहा जाता है कि इस दौरान ट्रंप ने अपनी तानाशाही पद्धति अपनाई, जो कारगर साबित हुई और यहीं ट्रंप के इस सिद्धांत की सार्थकता है। इससे युद्ध की समाप्ति हो सकती थी या इससे कहीं बड़ी लड़ाई हो सकती थी। लेकिन फिलहाल गाजा में युद्ध को फिलहाल खत्म करने का काम हो चुका है। ट्रंप ने इसे सरल बनाया है, जिसे बाइडेन नहीं कर सके। खास बात यह है कि तत्कालीन अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन ने अपने कार्यकाल के दौरान भले ही अमेरिकी श्रमिकों के लिए कई कल्याणकारी कदम उठाएं हो, जिसमें कुछ उद्योगों में यूनियन बनाने का अधिकार शामिल है, जहां पहले इसकी अनुमति नहीं थी। लेकिन वे विदेश नीति में विफल रहे। उन्होंने इजरायल और यूक्रेन दोनों का समर्थन किया और दोनों को हथियार आपूर्ति जारी रखी। जिसके बारे में यह कहा जा रहा है कि जो बाइडेन की यह नीति ट्रंप के भावी एजेंडे में षामिल नहीं है। यही कारण रहे कि इजरायल और हम्मास के बीच सहमति बनने की घोषणा भी सबसे पहले ट्रंप ने ही की। तो वहीं दूसरी ओर इजरायल और हम्मास के बीच हुए समझौते को लेकर कई सारे सवाल बने हुए हैं। कहा जा रहा है कि अगर सहमति पर दोनों पक्ष कायम रहे रहे और इस पर अमल शुरु हुआ तो भी इस बात की गारंटी नहीं है कि इससे स्थायी शांति कायम हो ही जाएगी। पहले छह हफ्ते के युद्धविराम के दौरान जहां 33 बंधक छोड़े जाने हैं, वहीं स्थायी युद्धविराम की शर्तों पर बातचीत शुरु होनी है। आगे चलकर सारे बंधक छोड़े जाने की बात है। बहरहाल, यह सहमति शांति के लिए एक अच्छा मौका है। उम्मीद की जानी चाहिए कि दुनिया की तमाम अमन पसंद शक्तियां इस मौके को जाया नहीं होने देंगी।

अगर इजरायल के घोर विरोधी ईरान की बात की जाए तो ईरान के सर्वाच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई ने कहा कि गाजा ने इजरायल को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया है। खामेनेई ने कहा कि इजरायल और हमास के बीच हाल ही में हुए युद्ध विराम समझौते को गाजा के पक्ष में बताया है। टाइम्स ऑफ इंडिया के अनुसार, खामेनेई ने कहा कि छोटे गाजा ने हथियारों से लैस और अमेरिका द्वारा पूरी तरह से समर्थित शासन को घुटनों पर ला दिया। ईरान ने इसी के साथ ट्रंप के उस बयान की निंदा की जिसमें उन्होंने फलस्तीनियों को गाजा से किसी सुरक्षित जगह पर जाने को कहा था।

●●●

सेहतमंद आहार को बनाएं पहली पसंद

विजय गर्ग

भोजन के चुनाव में खास ख्याल रखना चाहिये कि वह स्वाद तो हो, साथ ही सेहत के लिए लाभकारी भी हो। उसमें शामिल पदार्थ नुकसानदेह न हों। जिस टेस्टी खाद्य पदार्थ या ड्रिंक से सेहत को नुकसान पहुंचाने का अंदेशा हो तो उससे परहेज ही बेहतर है। इसके बजाय उनके हेल्दी विकल्प इस्तेमाल करें।

खाने की मेज पर अपनी पसंद के व्यंजन देख अकसर भूख जाग जाती है। लेकिन यही स्वादिष्ट व पसंदीदा भोजन कभी-कभी हमारा दुश्मन भी हो जाता है। क्योंकि ज़्यादातर हम सिर्फ बात पर ध्यान देते हैं कि क्या खाना चाहिए। लेकिन क्या नहीं खाना चाहिए इस पर कम ही ध्यान दिया जाता है। ऐसे में भोजन हमें खुद पर नियंत्रण रख ग्रहण करना चाहिए। कुछ खाद्य पदार्थ आपके खाने की मेज पर ही मौजूद होते हैं जिनसे परहेज़ आपको स्वस्थ रखने में बड़ी मदद कर सकता है। ब्रिटिश हार्ट फाउंडेशन की वक्ता और डायटिशियन विक्टोरिया टेलर ने कुछ ऐसे ही खाद्य पदार्थों को इंगित करते हुए बताया है कि अगर आप उन्हें अपनी दिनचर्या से दूर कर लें तो काफी फायदा हो सकता है।

एनर्जी ड्रिंक्स

आजकल तनाव और थकान को कम करने में मदद देने वाले ढेर सारे एनर्जी ड्रिंक बाज़ार में आ गए हैं। जिसका सभी इस्तेमाल कर रहे हैं, बिना यह पता किए कि उसमें क्या तत्व मिलाए गए हैं। एनर्जी ड्रिंक फायदेमंद होती हैं, यदि उन्हें पीने के जोखिमों के बारे में जागरूकता के साथ उपयोग किया जाये। ज्यादातर में एनर्जी ब्लेंड जैसे कि कैफीन, टॉरिन, और ग्लूकोरोनोलैक्टोन इतनी मात्रा में होते हैं जो कि सुरक्षित नहीं होते। बहुत अधिक मात्रा में लें तो ये हानिकारक हो सकते हैं।

पैकेज्ड जूस

फलों का ताजा निकाला गया जूस फायदेमंद होता है। लेकिन आज पैकेज्ड जूस भी आसानी से उपलब्ध हैं। जूस के पैकेट पर फलों का इस्तेमाल करके बनाया गया जूस लिखा होता है। लेकिन इस जूस को तैयार करने के लिए फलों को निचोड़कर उनसे जूस निकाल लिया जाता है और इसे आमतौर पर लंबे समय

तक टैंकों में स्टोर करके रखा जाता है। इससे जूस लगभग फ्लेवर और पोषण मुक्त हो जाता है। फिर इसमें फ्लेवर और चीनी मिलाए जाते हैं और इसी स्वाद का हम आनंद ले रहे होते हैं।

सफेद ब्रेड

बच्चों की टिफिन से लेकर दफ्तर के लंच बॉक्स तक में ब्रेड की डिशेज रहती हैं। क्योंकि इन्हें बनाना आसान होता है। लेकिन सफेद ब्रेड अन्य ब्रेड विकल्पों की तुलना में फाइबर और प्रोटीन के मामले में बहुत खराब होता है। इसकी जगह पूरी तरह से गेहूं से बने, ब्राउन ब्रेड कुछ हद तक इस्तेमाल किए जा सकते हैं। फाइबर हमारे शरीर के पाचन को ठीक रखता है। सफेद ब्रेड में फाइबर का अभाव होता है। इससे शरीर में शुगर बढ़ने का भी डर होता है।

प्रोसेस्ड मीट

प्रोसेस्ड मीट में संतृप्त वसा और नमक होता है, जिससे आंत्र कैंसर होने की आशंका होती है। इसका उपयोग बाहर बने जंक फूड्स के साथ-साथ आज घरों में भी हो रहा है जो कि स्वास्थ्य के लिए खतरनाक होता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने प्रोसेस्ड मीट को कैंसर के खतरे से जोड़ा है। क्योंकि इसमें उच्च मात्रा में सोडियम और संतृप्त वसा हृदय रोग के खतरे को बढ़ा सकती है। वहीं वजन बढ़ने और मधुमेह का कारण बन सकती है।

टोस्ट, जैम को भी ना कहें

टोस्ट पर जैम, आमतौर पर हर घर में खाया जाता है। बच्चों को तो यह विशेष रुप से पसंद होता है। लेकिन इसमें पोषक तत्वों की मात्रा बहुत कम होती है। इनकी जगह पर केला खाने से आपको ज़्यादा विटामिन, मिनरल, फाइबर मिलेंगे। जैम की जगह फलों को डाइट में शामिल करें। अपने अनाज में कुछ फल काट कर डालें, जैम की जगह टोस्ट पर केला आदि फल खाएं। सैंडविच में सलाद डालें तो बेहतर है।

चॉकलेट की जगह मेवे

चॉकलेट एक ट्रीट के रुप में ठीक है, लेकिन रोज़ाना नाश्ते के लिए, बिना नमक वाले नट्स या ताजे फल इस कमी को पूरा करने के बेहतर तरीके हैं। नट्स में विटामिन और मिनरल के साथ-साथ प्रोटीन और फाइबर भी होते हैं और संतृप्त वसा कम होती है, जिससे ये आपके कोलेस्ट्रॉल स्तर और दिल के स्वास्थ्य के लिए बेहतर हैं। नट्स लगभग 30 ग्राम ही लें।

एक स्वस्थ आहार में सभी पोषक तत्व और खाद्य समूह को शामिल किया जा सकता है। उनमें संतुलन बनाकर आप अपनी आधी प्लेट फलों और सब्जियों से भरें और एक चौथाई से थोड़ा अधिक अनाज से। इन स्वस्थ व पसंदीदा विकल्पों से भी आप भोजन की मेज सजा सकते हैं। ●●●

गुमशुदा खजाने का रहस्य

वर्षा पटेल,
ब्रुकलिन स्कूल देहरादून

एक छोटे से गाँव में एक लड़का रहता था, जिसका नाम सूरज था। सूरज का सपना था कि वह एक बड़ा साहसी बनकर दुनिया भर में घूमे और रोमांचक खोजों पर निकले। लेकिन उसकी किस्मत हमेशा उसे मज़ाक उड़ाने वालों के बीच ही छोड़ देती थी। लोग अक्सर उसका मजाक उड़ाते थे, क्योंकि वह गाँव में सबसे ज्यादा ख्वाबों में खोया रहने वाला लड़का था।

एक दिन सूरज ने गाँव के पुराने पुस्तकालय में एक रहस्यमय किताब देखी, जिसका नाम था "गुमशुदा खजाने का रहस्य"। किताब को खोलते ही सूरज के चेहरे पर चमक आ गई। किताब में एक पुरानी मान्यता का जिक्र था कि गाँव के पास एक जंगल में एक खजाना दफन था, जिसे केवल एक साहसी व्यक्ति ही ढूंढ सकता था। सूरज ने तुरंत निर्णय लिया कि वह इस खजाने को ढूंढेगा और दुनिया का सबसे बड़ा साहसी बनेगा।

सूरज ने अपनी साहसिक यात्रा की शुरुआत की। उसने अपने साथ खाने-पीने की चीज़ें, एक पुराना नक्शा, और एक बड़ा झंडा लिया। गाँव के लोग उसकी योजना पर हंसते रहे, लेकिन सूरज ने हार मानने का नाम नहीं लिया।

वह जंगल की ओर बढ़ा, रास्ते में कई मुसीबतें आ रही थीं – काँटों से भरे रास्ते, उबड़-खाबड़ पहाड़, और खतरनाक जानवर।

"तुम क्या समझते हो? मैं डरने वाला हूँ?" सूरज ने खुद से कहा और आगे बढ़ता गया।

जंगल में घुसते ही सूरज को एक अजीब आवाज सुनाई दी। वह डर के बजाय और ज्यादा उत्साहित हो गया। "क्या यह खजाने की आवाज हो सकती है?" वह खुद से बड़बड़ाते हुए उस दिशा में बढ़ने लगा।

जंगल में चलते हुए सूरज ने देखा कि एक जंगली बंदर

उसके सामने कूदता हुआ आ रहा था। बंदर सूरज से बोला, "तुम खजाना ढूंढने आए हो न? पर तुमसे पहले मुझे मिलकर कुछ सवाल पूछने होंगे!"

सूरज हैरान हो गया। "बंदर, तू बोल सकता है?"

"बिलकुल!" बंदर ने झुंझलाते हुए कहा, "क्या तुम मुझसे सवालों का जवाब दे सकोगे?"

सूरज ने सोचा, "अरे, बंदर को सवाल-जवाब करने के लिए टाइम नहीं है, मुझे खजाना चाहिए!" फिर भी उसने मन में सोचा कि अगर वह बंदर से कुछ सवालों के जवाब दे देगा, तो शायद वह रास्ता दिखाए।

"ठीक है, सवाल पूछो," सूरज ने हिम्मत जुटाकर कहा।

"पहला सवाल: अगर तुम्हारे पास पांच केले हैं और तुमने तीन खा लिए, तो तुम्हारे पास कितने केले हैं?" बंदर ने

शरारती मुस्कान के साथ पूछा।

"दो केले!" सूरज ने झट से जवाब दिया।

बंदर हंसते हुए बोला, "बिलकुल सही! अब दूसरा सवाल: अगर जंगल में एक हाथी पेड़ से गिर जाए, तो क्या तुम उसे उठाकर फिर से खड़ा कर पाओगे?"

सूरज थोड़ी देर सोचने के बाद बोला, "नहीं, मैं उसे अकेले नहीं उठा सकता!"

"तुम ठीक कह रहे हो," बंदर ने सिर हिलाया। "तुम सही दिशा में जा रहे हो, अब आगे बढ़ो। खजाना तुम्हारे पास है!"

सूरज ने तुरंत धन्यवाद कहा और आगे बढ़ने लगा। अब उसे पूरा यकीन हो गया कि वह सही रास्ते पर है।

सूरज कुछ और किलोमीटर बढ़ने के बाद एक बड़ा पेड़ देखता है, जिसके नीचे एक पुरानी, धूल भरी संदूक दिखती है। यह खजाना वही था जिसे सूरज ने अपनी आँखों से देखा था। उसने खुशी से वह संदूक खोला, लेकिन अंदर जो निकला वह देखकर उसकी आँखें फटी की फटी रह गईं।

संदूक में सोने-चांदी का खजाना नहीं था, बल्कि ढेर सारे पुराने जोक्स और हंसी-ठहाके लिखे हुए थे। पहला जोक पढ़ते हुए सूरज हंस पड़ा।

"तुमने सुना है? एक बंदर ने होटल में जाकर कहा: 'भैया, एक केले की चाय देना!'"

सूरज हंसी से लोट-पोट हो गया। वह सोचने लगा, "यह तो मज़ाक है, खजाना तो अलग ही तरह का है!"

फिर सूरज ने और जोक्स पढ़े, और हर जोक के साथ उसकी हंसी और बढ़ती चली गई। "यह तो वाकई मजेदार खजाना है," सूरज ने कहा।

कुछ देर बाद सूरज को महसूस हुआ कि असली खजाना वो नहीं जो सोने-चांदी के रूप में था, बल्कि वह हंसी और मज़ाक था जो उसने महसूस किया। "सच में," सूरज बोला, "यह खजाना मेरी ज़िन्दगी का सबसे बड़ा खजाना था, क्योंकि हंसी और आनंद ही असली खजाना है।"

जब सूरज वापस गाँव लौटकर आया, तो लोग उसकी बहादुरी और साहस की तारीफ कर रहे थे। सूरज ने सबको वह किताब दिखाई और कहा, "मुझे खजाना मिला, लेकिन सबसे बड़ा खजाना वो हंसी थी, जो मुझे अपनी यात्रा में मिली।"

सूरज ने यह समझा कि जीवन में सही खजाना वह नहीं है जिसे हम पैसे या चीज़ों के रूप में ढूंढते हैं, बल्कि वह है हंसी, आनंद और किसी के साथ खुशी साझा करने की भावना। साहसिकता का असली मतलब कभी-कभी किसी बड़ी खोज से नहीं, बल्कि अपनी मुस्कान और जिंदादिली से होता है। ●●●

डॉक्टर और कंपनियों का कपट जाल

दवाओं की कीमत में उछाल

डॉक्टर बनवाते ब्रांड, 38 रुपए की दवा की एमआरपी 1200 रुपए

प्रियंका सौरभ

नियमों में कहा गया है कि केवल प्रिस्क्रिप्शन वाली दवा और ओवर-द-काउंटर दवा के प्रकार जो केवल फ़ार्मेसियों में बेचे जा सकते हैं, उन्हें सभी फ़ार्मेसियों में बिल्कुल एक ही क़ीमत पर बेचा जाना चाहिए। इसलिए, की दवाओं की कीमतें फ़ार्मेसियों के बीच उतार-चढ़ाव नहीं करती हैं, जिसका अर्थ है कि इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि आप अपना प्रिस्क्रिप्शन भरने के लिए किस फ़ार्मेसी को चुनते हैं। यही नहीं दवा बनाने वाली कंपनियों पर ये नियम सख्ती से लागू किये जाए कि वह हर साल्ट का मूल्य भारत सरकार के नियमानुसार एक जैसा निर्धारित करे चाहे ब्रांड कोई भी हो। मूल्य ब्रांड पर न होकर साल्ट पर हो ताकि डॉक्टरों और कंपनियों के काले धंधे पर लगाम लगे और मरीज को 300 रुपये का इंजेक्शन बारह हज़ार में न खरीदना पड़े। हर्बल दवाइयों और ओवर-द-काउंटर दवाइयों के प्रकार जो फ़ार्मेसी के अलावा अन्य दुकानों, जैसे सुपरमार्केट और कियोस्क में बेची जा सकती हैं, उनकी की कीमतों में बदलाव की अनुमति सरकार से हो। ये कीमतें पूरी तरह से स्टोर द्वारा निर्धारित की जाती हैं, इसलिए आपको एक स्टोर से दूसरे स्टोर में कीमतों में अंतर का अनुभव होता है।

देश में दवाओं की क़ीमत सरकार नहीं बल्कि डॉक्टर ख़ुद तय कर रहे हैं। डॉक्टर अपने मुताबिक ब्रांड बनवाते हैं। क़ीमत फिक्स करते हैं। 38 रुपए की दवा की एमआरपी 1200 रुपए कर दी जा रही है। यह महज़ एक एग्जाम्पल है, ऐसा तमाम दवाओं में किया जा रहा है। एक्सपर्ट मानते हैं, 20 साल में 40 हज़ार करोड़ से दवा का कारोबार 2 लाख करोड़ के पास पहुँच गया है। इसका बड़ा कारण वह एमआरपी में बड़े खेल को मानते हैं। 2005 से 2009 तक 50 प्रतिशत एमआरपी पर दवाएँ बिक रही थी। अगर 1200 रुपए की एमआरपी है तो डीलर को 600 रुपए में दी जाती थी। अब डॉक्टर अपने हिसाब से ही एमआरपी तय करवा रहे हैं। जबकि नियमों के अनुसार डॉक्टर दवाओं के रेट तय नहीं करते। दवाओं के रेट, दवा बनाने वाली कंपनियाँ तय करती हैं। दवाओं के रेट तय करने में कई कारक शामिल होते हैं। दवाओं पर व्यापारियों को अच्छा मुनाफ़ा होता है।

ब्रांडेड दवाओं पर रिटेलर ज़्यादा से ज़्यादा 20-25 प्रतिशत तक की छूट देते हैं। जेनेरिक दवाओं पर 50-70 प्रतिशत तक की छूट मिलती है। जेनेरिक दवाएँ सस्ती होती हैं क्योंकि उन्हें महंगी जांचों से नहीं गुज़रना पड़ता। दवा खरीदते समय, दवा के रैपर पर क्यूआर कोड होना चाहिए. दवा के रैपर पर क्यूआर कोड से दवा का नाम, ब्रैंड का नाम, मैन्युफ़ैक्चरर की जानकारी, मैन्युफ़ैक्चरिंग की तारीख और एक्सपायरी की तारीख मिलती है। दवाओं या उनके अवयवों के बारे में जानकारी के लिए, डॉक्टर या फ़ार्मासिस्ट से पूछा जा सकता है। मगर जो दवाएँ सरकार के कंट्रोल से बाहर, उनमें मनमानी दवा की क्वालिटी और एमआरपी की निगरानी के लिए भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय के अधीन नेशनल फार्मास्युटिकल प्राइस अथॉरिटी काम करती है। सरकार ड्रग्स प्राइस कंट्रोल ऑर्डर के माध्यम से दवा की एमआरपी पर नियंत्रण रखती है। आवश्यक और जीवन रक्षक दवाओं के लिए अधिकतम मूल्य निर्धारित करने के साथ डीपीसीओ की जिम्मेदारी मरीजों के लिए दवाएँ सस्ती और सुलभ कराने की भी है।

सरकार जिन दवा को डीपीसीओ के अंडर में लाती है, उनकी एमआरपी तो

कंट्रोल में होती है, लेकिन सैकड़ों फॉर्मूले की दवाएँ आज भी सरकार के कंट्रोल से बाहर हैं, जिसकी एमआर पी में मनमानी चल रही है। दवाओं की कीमतों में इजाफे को लेकर सरकार की गाइडलाइन है कि एक साल में 10 प्रतिशत ही एमआरपी बढ़ाई जा सकती है। लेकिन कंपनियाँ प्रोडक्ट्स का नाम बदलकर हर साल डॉक्टरों की डिमांड वाली एमआरपी बना रही हैं। कंपनियाँ अलग डिवीजन और ब्रांड बदलकर एमआरपी अपने हिसाब से फिक्स कर देती हैं।

फार्मा फैक्ट्रियों से ही देश में दवाएँ सप्लाई की जाती हैं। कंपनियों और डॉक्टरों के इस खेल में कंपनियाँ अपने मुनाफे के लिए नियमों को ताक पर रखकर डॉक्टरों के हिसाब से न सिर्फ़ दवाएँ बनाने को तैयार हो जाती है, बल्कि मनमानी क़ीमत भी तय कर देती है। यही नहीं इन कंपनियों से मोबाइल पर ही डील हो जाती है। तभी तो देश भर में डॉक्टर और हॉस्पिटल ख़ुद अपनी दवाएँ बनवा ही रहे हैं और मनमाफिक मूल्य पर बेच रहे है। डॉक्टर और हॉस्पिटल तो ख़ुद अपनी दवाएँ बनवा रहे हैं और माइक्रो पायलट का इस्तेमाल कर रहे हैं। इससे ही एक्सपायरी निर्धारित होती है। अगर दवा में माइक्रो पायलट की क्वालिटी थोड़ी डाउन कर दी जाए तो मार्जिन बढ़ जाएगा, लेकिन एक्सपायरी का समय कम हो जाएगा। इसके पीछे कारण यह कि मटेरियल और एक्सपायरी को लेकर सरकार की कोई गाइडलाइन नहीं है। एक्सपायरी की डेट भी कंपनियाँ तय करती हैं। सरकार के कंट्रोल में जो दवाएँ हैं, इसे लेकर थोड़ी सख्ती है। बाक़ी मेडिसिन पर कोई ख़ास निगरानी नहीं है।

ये एक गंभीर विषय है कि दवा का निर्माण, आयात या बिक्री करने वाली कंपनियाँ ही दवा की कीमतें निर्धारित करती हैं।

नियमों में कहा गया है कि केवल प्रिस्क्रिप्शन वाली दवा और ओवर-द-काउंटर दवा के प्रकार जो केवल फ़ार्मेसियों में बेचे जा सकते हैं, उन्हें सभी फ़ार्मेसियों में बिल्कुल एक ही क़ीमत पर बेचा जाना चाहिए। इसलिए, की दवाओं की कीमतें फ़ार्मेसियों के बीच उतार-चढ़ाव नहीं करती हैं, जिसका अर्थ है कि इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि आप अपना प्रिस्क्रिप्शन भरने के लिए किस फ़ार्मेसी को चुनते हैं। यही नहीं दवा बनाने वाली कंपनियों पर ये नियम सख्ती से लागू किये जाए कि वह हर साल्ट का मूल्य भारत सरकार के नियमानुसार एक जैसा निर्धारित करे चाहे ब्रांड कोई भी हो। मूल्य ब्रांड पर न होकर साल्ट पर हो ताकि डॉक्टरों और कंपनियों के काले धंधे पर लगाम लगे और मरीज को 300 रुपये का इंजेक्शन बारह हज़ार में न खरीदना पड़े।

हर्बल दवाइयों और ओवर-द-काउंटर दवाइयों के प्रकार जो फ़ार्मेसी के अलावा अन्य दुकानों, जैसे सुपरमार्केट और कियोस्क में बेची जा सकती हैं, उनकी की कीमतों में बदलाव की अनुमति सरकार से हो। ये कीमतें पूरी तरह से स्टोर द्वारा निर्धारित की जाती हैं, इसलिए आपको एक स्टोर से दूसरे स्टोर में कीमतों में अंतर का अनुभव होता है। ●●●

अपने अंदर धर्म को उतारना ही असली धर्म है

क्या ईश्वर से कोई इतना नाराज़ हो सकता है!

तारिक खान, लेखक

'हेरिटेज ऑफ अवध' नामक ट्रस्ट द्वारा एक नाटक 'हत्या' का मंचन संगीत नाटक एकेडमी (एस0एन0ए0) के वाल्मीकि रंगशाला, निकट रिजर्व बैंक,गोमती नगर,लखनऊ में किया गया । जिसमें विभिन्न किरदारों ने अपनी कला से दर्शकों को लगातार नाटक से जोड़े रखा । इस नाटक में आरोपी आदर्श तिवारी के पिता की कैंसर के कारण मृत्यु हो जाती है । आरोपी धनाभाव के कारण अपने पिता का सही से इलाज न करा पाने के कारण व अपने परिवार का भरण पोषण तक न कर पाने की वजह से इतना दुखी हुआ कि वह ईश्वर से ही नाराज़ हो गया और उसकी हत्या कर दी । नाटक में वकील और आरोपी में जबरदस्त बहस होती है जिसमें वकील इस बात को मानने को तैयार ही नहीं है कि कोई शख्स ईश्वर की ही हत्या कर सकता है। पूरे नाटक में वकील और आरोपी में जो बहस चलती है वह आम ज़िंदगी के विभिन्न पहलुओं को छूती है और सिस्टम पर बहुत से सवाल भी खड़े करती है । यह नाटक कहीं न कहीं ओशो के विचारों पर आधारित है । नाटक ने आम जनता को एक संदेश देते हुए कहा कि हमें धर्म को आत्मसात नहीं

करना है बल्कि अपने अंदर धर्म को उतारना है जैसे कि कोई व्यक्ति पानी के अंदर उतरता है लेकिन उसकी प्यास तब तक नहीं बुझती है जब तक कि पानी को अपने अंदर न उतारे। इस नाटक की खास बात यह भी थी कि इसमें जज का किरदार निभाने वाले बीडी नकवी वास्तविक रुप से भी जज रह चुके है। नाटक में वकील के रुप में प्रणव श्रीवास्तव , आरोपी के रुप में आदर्श तिवारी , यमराज के रुप में अतुल द्विवेदी पत्नी के रुप में मुस्कान सोनी पिता के रुप में रंजीत पाल व लाला के रुप में संकल्प आदि ने अपनी कला का लोहा मनवाया।

इस बेहतरीन नाट्य रुपांतर को देखने के लिए कंाग्रेस नेता व पूर्व मंत्री मुईद अहमद, पूर्व आयकर आयुक्त अलोक मित्रा, पूर्व एडीजी पंजाब पुलिस जयवीर सिंह, तारिक सिद्दीकी, हिलाल नकवी,शबाहत हुसैन,मेराज हैदर,नदीम उद्दीन, उबैद नासिर,वरिष्ठ पत्रकार नज़म एहसन, शमशेर गाज़ीपुरी, मोहम्मद नसीम, नदीम अहमद, तारिक खान, परवेज़ अख़्तर, समेत शहर के कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

नाटक का निद्रेशन रियाज़ अल्वी , कार्यशाला निद्रेशक रहमान खान , प्रोडयूसर मुजतबा खान व म्युिज़िक सहायक अलिशबा खान ने हिस्सा लेकर इस नाटक को कामयाब बनाने में अपना योगदान दिया। नाटक का लेखन अख्तर रायपुरी ने किया। पूरे नाटक के दौरान हाल खचाखच भरा रहा और दर्शक लगातार तालियों से कलाकारों का उत्साहवर्धन करते रहे । कार्यक्रम का संचालन मिस अंजुम ने किया।

वो पीपे वाली शक्कर..।

कुमकुम श्रीवास्तव
लखनऊ

अम्माजी आज बहीखाता लेकर बैठी थीं। हिसाब किताब में बहुत पक्की थीं, आना पाई जब तक उनका मिल नहीं जाता था ना ख़ुद सांस लेती थीं, ना लेने देती थीं। चूल से चूल मिलना बेहद जरूरी था। अभी दो दिन पहले उनकी पोती का मुंडन संस्कार हुआ था। नाते रिश्तेदारों की गहमा-गहमी और ढोलक की थाप से पूरा मोहल्ला गुंजायमान था। बरसों बाद इस घर में उसकी किलकारियां गूंजी थी। सब मेहमान बिदा हो गये थे, बस घर में बेटा-बहू, सुमन और वह स्वयं ही थीं। पति को ऊपर शिफ्ट हुए अर्सा बीत गया था। तब बच्चे बहुत छोटे छोटे थे। पैसे की महत्ता वह बहुत अच्छे से समझती थीं। पाई पाई का उनके पास हिसाब रहता था। कभी कभी जब वह अपने लड़के श्यामू से ख़र्चे का ब्यौरा मांगती थीं तो वह चिढ़ जाता था। उन्होंने ऐसे ही कतरब्योंत करके अपनी गृहस्थी की गाड़ी खींची थी। परंतु ईश्वर की कृपा से इस समय आर्थिक तंगी उतनी नहीं थी। बेटा अच्छा कमा रहा था। सुमन भी अध्यापिका का काम कर रही थी। कुल मिलाकर गुज़र बसर अच्छी तरह से हो रही थी। 'अम्माजी ये शक्कर और देशी घी का पीपा कहां रखवा दें ?' अंदर कमरे में आती हुई उनकी बहू बोली। 'हमाये सर पे, और कहां।' झुंझलाती हुई और अपना चश्मा ऊपर सरकाती हुई वह बोलीं। 'दिखता नहीं है क्या तुम को दुलहिन? ऐसा करो के दोनों पीपे टांड़ पर चढ़वा दो। वहीं पर बच जायगी, नहीं तो तुम सब जने सरबत घोल के पी जाओगे। सरक लो यहां से, हिसाब में बहुत हेर फेर है। पता नहीं क्या किया है इस बार स्यामू ने। आज्ञाकारी बहू ने दोनों टिन ऊपर रखवा दिये, और वह अपने हिसाब में व्यस्त रहीं।

गर्मी अब जाने को थी, हल्की-फुल्की ठंड सुबह सैर के समय लगती थी। घर की सफाई सुथराई बड़े पैमाने पर हो रही थी। टांड़ पर सफाई करवाते ही बहू चहक कर बोली, 'अरे अम्मा जी! इस बार दीवाली पर शक्कर खरीदनी ही नहीं पड़ेगी। पीपा भर के यहां रखी है।'

'देखो कहे दे रहे हैं दुलहिन, इस सक्कर में हाथ ना डालना, कुछ भी बनाने का है तो मार्किट से मोल ले लेना। इसको तो देखना भी नहीं, हां नहीं तो।' वह बुदबुदाते हुये बाहर बरामदे में चलीं गईं। उनके पीछे-पीछे उनकी बहू भी आ गई।

'अब क्या है?'

बहू ने सामान की लिस्ट आगे बढ़ा दी। महिने भर के राशन पानी के साथ आने वाले त्यौहार के सामान की लिस्ट थी। उन्होंने चश्मा अपनी सूती धोती के छोर से साफ किया फिर पढ़ने लगीं। पढ़ते ही उनका पारा सातवें आसमान पर पहुंच गया।

'यहां टकसाल नहीं लगी है और ना ही पैसों का पेड़ लगा है। इसमें से आधा सामान कम करना पड़ेगा। ये पांच किलो सक्कर काहे मंगवा रही हो? मोहल्ले में बांटोगी क्या? इतना पैसा स्यामू के बाबू नहीं छोड़ गये हैं। दुलहिन! तुम हमका लुटवा देहो।'

हम क्यों लुटवा देंगे अम्मा जी, त्यौहार सर पर खड़ा है। आने जाने वाले लोग भी तो रहेंगे ना! फिर ठंड में चाय भी ज़्यादा पी जाती है। अच्छा रहने दीजिए ऊपर जो टांड़ में पीपे वाली जो शक्कर है उससे काम चल जाए...।'

बीच में ही वह अपनी कड़क आवाज में बोली पड़ीं। 'ख़बरदार! उसकी तरफ़ आंख भी उठाई तो। वह सुमनिया के ब्याह के लिए रखी है। ऐसे ही नहीं सादी ब्याह होता है। तिल तिल सामान जुटाना पड़ता है और ख़ुद की भी आहुति देनी पड़ती है। तब जाकर

गंगा जी नहाने को मिलती हैं। हां नहीं तो।' उनकी दुलहिन समझ गई कि अब एक घंटे का लेक्चर शुरु हो गया है, और वह चुप्पे किनारे से निकल गई।

उनकी एक ख़ास आदत थी कि वह कभी भी अच्छी साड़ी नहीं पहनती थीं। उनको बक्से में सहेज कर रख देती थीं। खाली साड़ी ही क्यों, सभी कुछ। लगभग चालीस साल पुराना डिनर सेट, बड़े-बड़े बर्तन भांडे जो उनकी सास ने अम्मा जी को दिया था उसको भी उन्होंने अंडरग्राउंड कर दिया कि बिटिया के दहेज में काम आयेगा। इसी तरह से उनके हाथ के बने हुए चादरें, मेजपोश इत्यादि ढेर सारा सामान वह संभाल कर रखती चली आ रहीं थीं। किसी को भी उन पर हाथ लगाने की भी मनाही थी। वह खुद ही उन सामानों की देखभाल करती थीं। खाली वही नहीं, उस समय लगभग हर घर की यही कहानी होती थी। सब अच्छा समान जुगै के रख लिया जाता था आगे काम आने के लिए। पूरा जीवन इन अतरंगी सामानों की देखभाल में ही गुज़र जाता था। पहले की लड़कियों की बात ही कुछ और होती थी। वह चूं चपड़ नहीं करती थीं। जो उनको दे दिया जाता था उसी में वह खुश हो जाती थीं।

देखा जाय तो लड़कियों का वह लाल कवर वाला बक्सा केवल बक्सा भर ही नहीं होता था। उसमें उसकी मां की महक भरी रहती थी, जो सारी ज़िन्दगी उनके साथ रहती थी। वह यादों का ख़ज़ाना होता था। लेकिन आजकल फ़िजां का रंग ही दूसरा है। दहेज़ का सामान तो छोड़ दीजिए, वह अपना दूल्हा भी अपनी पसंद का ही लेती हैं। इसलिए अब इन चीजों की आवश्यकता ही नहीं रह गई है। दुनिया बहुत आगे निकल गई है।

आज श्यामू की शादी की सालगिरह है। घर में ज़्यादा तो नहीं पर ख़ास ख़ास लोग थे। खाना भी दुलहिन और सुमन मिल के बना रहीं थीं। अम्मा जी ने सबके लिए एक दिन पहले से ही बाजार की चीनी से नुक्ती के लड्डू बना लिये थे। एक ही तो लड़का था उनके। इतना तो वह उसके लिए कर ही सकती थीं। घर में ख़ूब रौनक थी। तभी बैठक से चाय की फरमाइश आई। सुमन जल्दी से चौके में पहुंच गई। शक्कर चाय में डालने के लिए जैसे ही डिब्बे में हाथ डाल तो उसमें हाथ पूरा नीचे तक चला गया। मतलब चीनी नदारद थी। भाग के वह सीधी अम्मा जी के पास चली गई। वह वहां आई हुई महिलाओं से बात करने में मगन थीं। उसकी तरफ़ वह देख ही नहीं रही थीं। बड़ी मुश्किल से एक बच्चे के द्वारा उनको बुलवाया और सारा माजरा समझाया।

'अम्मा! आज तो पीपे वाली शक्कर निकालनी ही पड़ेगी, और दूसरा कोई उपाय ही नहीं है।' फुसफुसाते हुए सुमन बोली। इतना सुनते ही उनकी त्योरियां चढ़ गईं। तुम लोग काहे उसके पीछे हाथ धो के पड़ी हो। उसको तो रहने ही दो, अपनी धोती के आंचल में बंधे कुछ मुड़े तुड़े नोट निकाल कर बोलीं, 'ये रुपये बगल वाले मुन्ना को देकर सक्कर मंगा लो। किसी को पता ना चलने पाये कि ऐन समय पर घर में सौदा आ रहा है। समझी की नहीं।' दुलहिन को तो हम कल देख लेंगे। आज उनका दिन है इसलिए कुछ कहेंगे नहीं। बाकी तो भगवान मालिक है।

'समझ गये अम्मा' कह कर वह भाग गई। ये भी एक अनोखी फ़ितरत होती थी कि सामान घर में होते हुए भी उसको हाथ नहीं लगाया जाता था। कोशिश ये की जाती थी कि संजोई हुई वस्तु महफ़ूज़ रहे। लिहाज़ा यहां भी वही हो रहा था।

दिन, महीने, साल बीतते चले गये लेकिन सुमन की बात कहीं पक्की नहीं हो पा रही थी। तीस से ऊपर हो चली थी। जहां भी श्यामू बात करने जाते उनको दहेज की लिस्ट पकड़ा दी जाती। जैसे लगता है कि वह लोग अपने घर को मुफ़्त के सामान से भरना चाहते हैं। इससे परेशान होकर वह जाना ही नहीं चाहते थे। एक दिन ख़बर आई कि दुलहिन की बहन मय पांच बच्चों के साथ पधार रहीं हैं। यहां तो अम्मा जी के एक ही पोती थी। अभी आस बाकी थी कि शायद कुलतारन पैदा हो जाय। धीरे-धीरे ये आशा अब निराशा में बदलती जा रही थी। वह थोड़ी चिड़चिड़ी सी हो रहीं थीं। पहले के लोगों को वंश आगे बढ़ाने की बड़ी चिंता रहती

थी, और दूसरी, बेटी की शादी की। यहां तो दोनों ही से वह वंचित थीं। अब घर में दिनभर बच्चों का हलाकम्प मचा रहता था। दो घड़ी वह चैन से दोपहर में सो भी नहीं पाती थीं। धन व्यय अलग से बढ़ गया था। महंगाई तो आसमान छू रही थी। एक दिन रात में दुलहिन उनके पास आईं और धीरे से उनके पास बैठ कर बोलीं,

'अम्मा जी, हम जानते हैं कि इस समय हालात बद से बद्तर हो गये हैं। लेकिन अब क्या करें बहन इतनी दूर से आई है। छुट्टियां ख़त्म होते ही चली जायेगी। कम से कम अभी एक महीना बच्चों की छुट्टियां हैं। ना होये तो इस बार पीपे की शक्कर निकाल दीजिए। जाते समय बहन जो बच्चों के हाथ में देकर जायगी उससे और कुछ इधर उधर से मिला कर पीपे की शक्कर को पूरा कर देंगे।' कहते कहते उसका गला भरभरा गया। उसने देखा कि अम्मा जी ने कोई जवाब नहीं दिया, तो उसकी हिम्मत और बढ़ गई। बोली, 'क्या कहतीं हैं आप? कहें तो दो किलो चीनी निकाल लें? बाद में उसको पूरा कर देंगे।' उठ कर वह शक्कर निकालने के लिए जाने लगी तो उन्होंने उसका हाथ कस कर पकड़ लिया। अपनी कान की बाली उतार कर देते हुए उदास होकर कहने लगीं, 'इसको बेच कर बाजार से शक्कर और जो भी जरूरत का सामान हो श्यामू से कह कर मंगवा लो।' लेकिन टांड़ वाली शक्कर को हाथ मत लगाना। हमारे जीते जी वह तो सुमनिया के ब्याह में ही ख़र्च होगी।'

कहते हैं कि लोगों को अपनी सांसों पर भी अख़्तियार नहीं होता है और मंसूबे बरसों के बना लेते हैं। पल का भरोसा नहीं ख़्वाब सदियों के। ये नामुराद सांस कब साथ छोड़ दे किसे पता? यहां भी यही होने वाला था। सुमन की शादी तो हो नहीं पाई। इसी ग़म में अम्मा जी ने खाट पकड़ ली। जो कुछ भी जमा पूंजी थी उनके इलाज में ख़र्च होने लगी। मर्ज़ कुछ खास नहीं था लेकिन ग़म तो ख़ास था। बेटी आंख के सामने अपने घर द्वार की हो जाती तो वह चैन से मर सकतीं थीं। लेकिन बात तो वही है ना, कि 'हुइये वहीं जो राम रचि राखा।' भाग्य के आगे किस की चली है। धरा उठाया रुपया सब उनकी बीमारी की भेंट चढ़ गया और अम्मा जी भगवान की भेंट चढ़ गईं।

विधि का विधान क्या दिन दिखाता है। जिस शक्कर को उन्होंने अपने जीते जी नहीं ख़र्च होने दिया आज उनके आख़िरी काम पर खर्च हो रही थी। हालांकि सुमन नहीं चाहती थी कि उस शक्कर से उनकी तेरहवीं पर मिष्ठान्न बने। उसने दबी हुई आवाज में मना भी किया था। परंतु किसी ने उसकी सुनी नहीं। श्यामू ने ऊपर टांड़ पर चढ़कर चीनी और घी के पीपे उतार दिए। इतने सालों में शक्कर बदरंग हो गई थी लेकिन मिठास में कोई कमी नहीं थी। यही हाल घी का भी था। वह भी एकदम पीला पड़ गया था लेकिन उसके गुण बरकरार थे। किस काम की मिठाई बननी थी, किस काम की बन रही थी। जीते जी उसका एक दाना तक ना उन्होंने चखा, ना ही किसी को चखने दिया। क्या फ़ायदा हुआ, इसके पीछे इतनी हाय हत्या मचाने का। किसी और की संचित राशि को दूसरे बड़े आराम से उड़ा देते हैं, जरा भी मन में कसक नहीं लगती है। जरा जरा सी निर्जीव वस्तुओं के लिए सब आपस में मन मुटाव कर लेते हैं, कटे मरे जाते हैं। ये नहीं सोचते हैं कि किस्मत से ज़्यादा और वक़्त से पहले आज तक ना किसी को कुछ मिल पाया है ना ही कभी मिलेगा। फिर काहे की हाय तौबा। शांति से जीवन व्यतीत करना चाहिए। जो आप का है वह आप ही को मिलेगा, कोई उसे छीन नहीं लेगा। जो आपके पास है उसको भोगने की आदत भी डालनी होगी क्योंकि वक्त किसी का सगा नहीं होता। कब बदल जाए पता ही नहीं चलता। इसलिए भविष्य के लिए इन फ़ालतू चीज़ों को इकट्ठा करने की तो कतई दरक़ार नहीं है। आजकल नई पीढ़ी इन चीजों से कोसों दूर भागती है। भई फ़ैशन बदल जाता है, खाने पीने के ट्रेंड चेंज हो जातें हैं, तो फ़िर क्यों मगजमारी करना। बस जियो जी भर के। आज जी लो, कल की किसने देखी।

●●●

बावफ़ा गाजर

गीता खत्री

बेचारी गाजर, खूबसूरत सी, स्मार्ट सी और यक़ीनन बहुत टेस्टी भी...और बहुत प्यारे से रंग के साथ अदायें बिखेरती हुई..जब सब्जी की टोकरी से बाहर निकलती है तो यूँ लगता है कि सुर्ख गाजरी जोड़े में कोई दुल्हन डोली से बाहर आ रही हो..... हाय रे.. इतनी खूबसूरती...

कल फ्रूट प्लेट मे सजा दी तो एक साहब ने फरमाया , "अब फ्रूट के साथ भला इसका क्या काम",...

हमने भी बड़ी सादगी से कह दिया,"अब इसका बीटा केरोटीन जब कीवी के और अंगूर के रस से मिलता है तो digestive system और activate हो जाता है, ऐसा हमें बाबा जी ने (गूगल वाले) बताया है.. सो सजा दिया", लेकिन बात कुछ सोचने वाली है ये गाजर मोहतरमा अखिरकार है क्या बला

सब्जी में मिला दिया जाए तो भी सब कहते हैं कि "ये तो सब्जी नहीं है",लेकिन हमारे घर में बनी हुई मिक्स वेज मे इसके बिना कोई मजा नहीं आता है...सलाद में चुकन्दर के साथ भी इसकी जुगलबन्दी निराली ही है, चुकन्दर के साथ भी बेचारी मीठी लगती है, खट्टा अचार बनाया दिया जाता है कभी, तो कभी मुरब्बा बन कर आ जाती है जूस बना कर भी टमाटर का साथ बख़ूबी निभा ही देती है, चाउमीन वाले भैया जी भी बोरा भरकर खरीद रहे होते हैं,फिर चाहे बर्गर बनाये या चिली पोटैटो.. सब में फिट...और सबसे लाजवाब तो तब लगती है जब दुल्हन की तरह सज धज कर हलवा की शकल अख्तियार कर लिया करती है,तो भई ,हमारे दिमाग के हिसाब से तो यह बावफा ही हैं, यानि सबके साथ मैच कर जाती हैं...वाह क्या बात है खाते ही जाओ, जी ना भरे, लेकिन फिर भी सवाल तो आखिर वही है कि आखिर कर ये किस कैटेगरी मे आती है, एक पुराने जासूस करमचंद तो इसे ही खा कर केस निपटा देते थे...

खैर बहराल, जो हो हमारी तो ये बहुत मनपसंद है इसलिए हमने फिर आज टेबल पर सजा दी है... अब आप भी बना दीजियेगा इस से कुछ भी, वैसे हमने इस मीठी सी गाजर से खट्टा सा और बहुत मजेदार अचार बनाया है.. जिसे नमक मिर्ची हल्दी के साथ सिर्फ थोड़ा सा सरसो का तेल ही डाल कर काली सरसों के साथ बनाया है...

अब आप ही बताइए कि इस गाजर को मै क्या नाम दूँ

जिंदगी की जरूरत क्यों नहीं रहीं किताबें?

विजय गर्ग

यह भी अजीब विरोधाभास है कि एक ओर जहां इंटरनेट से किताबों की उपलब्धता बढ़ गयी, वहीं दूसरी ओर किताबों के प्रति लोगों की रुचि कम हो गयी। सीमित सूचना के युग में असीमित ज्ञान के प्रति लोगों का रुझान कम क्यों हो गया?

दुनिया के सबसे बड़े पुस्तक मेलों में से एक नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला आज से दिल्ली के प्रगति मैदान में शुरू हो चुका है। पुस्तक मेला इस बार 1 फरवरी से 10 फरवरी आयोजित हो रहे हैं किताबें इस संसार को बदलने का एक साधन रही है। पर हमारा समय ऐसा है कि अब किताबों का संसार ही बदल रहा है। यह बदलाव, विषय, प्रस्तुति, पाठक वर्ग, व्यापार सभी दिशाओं में गतिशील है। देश के लेखकों और लेखकों के लिखे को प्रकाशित करने वाले जिस संसार को हम जानते रहे हैं, वह पूरी तरह बदल जाएगा, यह कभी सोचा नहीं था। क्या ऐसा हो सकता है कि किताबों की हमारी दुनिया सिर्फ अतीत की एक याद बनकर रह जाएगी? सोशल मीडिया और एक क्लिक पर जानकारी मिलने के दौर में ऐसा देखा जा रहा है कि मनुष्य किताबों से दूर चला आया है। जो किताबें संसार को बदलने का रहस्य लिए हमारे सिरहाने होती थीं, वे किसी सुदूर संसार की याद भर बनकर रह गई हैं।

1991 के बाद, उदारीकरण ने जहां देश में सामान्य उपभोग की वस्तुओं को सर्वसुलभ बनाने का काम किया, वहीं किताबों की दुकान कहीं खोने लगी। कागज और प्रिंटिंग की कीमतें इस तरह आसमान छूने लगीं कि छपी हुई किताबें प्रकाशन घर से लोगों के हाथों मे पहुंचते पहुंचते मध्यवर्गीय परिवार के बजट के बाहर छिटक गई। लेकिन इंटरनेट की क्रांति ने दूर देश की किताबें, लाखों किताबें पाठकों को एक क्लिक पर उपलब्ध करवा दी। जो किताबें जाने कितनी जगह घेरती थी, और जाने कितनी दुर्लभ होती थी, अब आपके मोबाइल में हैं। ऐसा लगता है जैसे किताबों की दुनिया मोबाइल में समा गई। कम समय में सहज उपलब्ध कराने की तकनीकी के कारण किताबों का संसार भी डिजिटल रुप में घर घर पहुंच गया है। आम आदमी जिसके हिस्से कल तक 'सड़क का साहित्य' था, अगर आज उसकी पहुंच के दायरे में 'विश्व का श्रेष्ठ साहित्य' सिमट आया है तो उसका कारण इंटरनेट की क्रांति है।

एक अर्थ में देखा जाए तो यह किताबों की उपलब्धता की महाक्रांति है। किताबों के रूप बदले हैं, पर वे पहले से ज्यादा सुलभ हैं। हर जगह उपस्थित है। लेकिन जीवन शायद किताबों से दूर चला आया है। उनकी उपलब्धता जरूर बढ़ी है, पर महत्व और प्रभाव में कमी आई है। अब वे कल्पनाशक्ति को रचती नहीं है, न विचारों को गढ़ पाती है। उनकी ताकत कम हुई है। समाज में उनकी जगह कम हो रही है। अब वे किसी आदमी के एकांत में ऐसा उद्वेलन पैदा नहीं कर पा रहीं कि वह व्यक्ति कुछ और ही बन जाए। जिन किताबों ने लिंकन, गांधी, लेनिन, आइंस्टाइन जैसों को रचा था, और प्रकारांतर से युग को बदल देने का माध्यम बन गई थीं, आज बड़ी अशक्त सी हैं। मानों जिन्दगी को किताबों की जरूरत ही नहीं रही।

जिंदगी अब कुछ और मांगती है।

यह कैसी विडंबना का समय है कि जब तकनीक और विज्ञान ने ज्ञान को सर्वसुलभ बनाने के रास्ते खोल दिए हैं, तो ठीक उसी समय उन रास्तों पर चलने वाले कदम कहीं खो गए हैं या फिर उनका चलना तो है, पर उस चलने से कोई यात्रा नहीं बनती, सिर्फ चलना रह जाता है। जीवन ऐसा बदला है कि उसमें गहराई के लिए बहुत जगह नहीं बची।

इंसान के पास उस एकांत का अभाव है, जिसमें वह खुद को निहार सके और रचना कर सके। उसके पास खुद तक पहुंच पाने का कोई रास्ता नहीं बचा है। वह आज महज एक उपभोक्ता है। किताबों का भी वह महज उपभोक्ता है, यदि किताबों तक उसकी जिंदगी का कोई रास्ता जाता है, तो भी।

जीवन सिर्फ विकास की सरकारी परिभाषाएं नहीं है, उसका सौदर्य विराट है, उसके अर्थ असीम है, उसके आयाम विविध है। इस बदलते संसार में इंसान को खुद को नए सिरे से परिभाषित करना होगा। उसे अपने लिए बदलते संसार को अपनी तरह से बदलना होगा, इस तरह कि उसकी खूबसूरती बची रहे, बढ़े और जिंदगी को सृजनात्मक रुप दे। किताबें विद्वता, आदर्श, धर्मशास्त्रगत की जड़वत दुनिया नहीं हैं, वे हमारी अंतरात्मा की हंसी और हमारे भीतर का पल्लवन है। संसार की बहुत-सी किताबें यशप्राप्ति, जड़ता, मिथ्या आचार के प्रचार से जन्मती हैं, और लोगों की जिंदगियों में आ कर उनके अस्तित्व को सीमित कर जाती हैं।

वे किताबें जो मानवीय व्यक्तित्व की जरूरत हैं, उनकी शिनाख्त की एक पगडंडी बनानी होगी और इस पर एक यात्रा रचनी पड़ेगी और यह जानना होगा कि विज्ञान और तकनीक इसमें बहुत सहायक है। बात जहां गलत हो जाती है, वह हमारे ही मन का कोई कोना है, जो भ्रम और हार को अपना सत्य मान लेता है। हमें जिंदगी को नए सिरे से खोजना होगा। किताबों को पढ़ने और औरों को भी पढ़ाने की प्रवृत्ति को बढ़ना होगा। लेखक को भी शब्द वहीं मिलेंगे।

समय के बदलाव ने लेखक, पाठक के माध्यम बदल दिए है, लेकिन अभिव्यक्ति की अभिलाषा यानी एहसास और जज्बातों को लिखने की बैचेनी अब भी वही है, जो गालिब या मीर में थी। यह सत्य है कि तकिए के नीचे किताब रखकर सोने का जमाना अब बीतने वाला है। पाठकों और प्रकाशकों को इसके लिए तैयार रहना होगा। पुस्तक मेले में होने वाली बिक्री में धीरे धीरे आ रही गिरावट इस ओर इशारा कर रही है। एक प्रकाशक का कहना है कि पुस्तक मेले में भीड़ बहुत आती है, पाठक कम आते है। उम्मीद है पुस्तक मेला पुस्तक प्रेमियों को किताबें खरीदकर पढ़ने के लिए प्रेरित करने में सफल रहेगा। ●●●

महान शायर 'गालिब'

डा0 आकांक्षा दीक्षित

उर्दू और फ़ारसी के महान शायर गालिब' या कहे मिर्ज़ा असदुल्ला बेग खां की रचनाओं में जीवन के विभिन्न रंग अपनी पूरी ऊर्जा से प्रकट होते हैं। गालिब जीवन का महत्व समझ उससे प्रेम करने वाले है उनकी जिजीविषा अनुकरणीय है कि'

हज़ारों ख़्वाहिशें ऐसी कि हर ख़्वाहिश पे दम निकले
बहुत निकले मेरे अरमान लेकिन फिर भी कम निकले।'

गालिब नियति से प्राप्त विसंगतियों की शिकायत तो करते हैं पर कहीं तल्ख नहीं होते। यहीं शायर गालिब की सर्वप्रमुख विशिष्टता है। एकतरफ भौतिकता में रमे गालिब पर्याप्त विलासी भी है। वही सूफियाना अंदाज ऐसा कि इस हद तक पहुँच जाते है कि आध्यात्मिकता में डुबकी भी लगाते है, अनदेखे, अज्ञात ईश्वरीय सत्ता पर पर वे विश्वास भी रखते है। वे यथासामर्थ्य स्वयं कष्ट सहकर दूसरों की मदद भी करते है और एक अभिजात्यपना भी समेटे रहते है। जो उनके घर ना आया या जिसने उचित सम्मान ना दिया उसको बिना हिचक त्यागने का साहस भी गालिब का विशिष्ट गुण था। स्वाभिमानी और अभिमानी के मध्य की रेखा बहुत क्षीण होती है गालिब आत्मसम्मान का सिरा थामे हुए है पर अभिमानी नहीं है।

मानव प्रेम गालिब के चरित्र का विशेष गुण था। ये सभी बाते कहीं विरोधाभासी भी लग सकती है पर यही सारी चीजे मिलकर गालिब की रचनाओं को एक अलग स्तर पर ले जाती हैं।

गालिब मात्र इसलिए स्मरणीय नहीं है कि उन्होने अपनी व्यक्तिगत और तत्कालीन विषमताओं को एकत्रित कर शब्दो में पिरोया अपितु इसलिए भी कि एक नवीन दृष्टिकोण भी दिया, सोचने का दायरा बढ़ाया भी और एक नयी अन्तर्दृष्टि प्रदान भी की। उनकी शायरी युग, देश, काल की सीमा से परे है इसीलिए विस्तृत भी है और लोकप्रिय भी। परवर्ती सभी शायरों पर न्यूनाधिक गालिब की छाप अवश्य है। वे शायरी के वटवृक्ष है जिसकी छाया से विलग स्वतंत्र पहचान बना पाने में कुछ ही शायर सफल हुए है। अपनी विपन्नता, विवशता और कुछ सीमा तक दुर्भाग्य को बर्दाश्त करना ही एक सामान्य मनुष्य के लिए सहज नहीं है पर गालिब का खिलंदड़ापन इस नियति प्रदत्त युद्ध और प्रारब्ध को झेलकर भी निराश नहीं होता। बहुत कुछ खोने के बाद भी यह आशावादिता और ईश्वर पर विश्वास उनकी रचनाओं में परिलक्षित होता है।

गालिब अत्यंत कठिन परिस्थितियों में मुस्कुराना ही नहीं जी खोलकर हँसना जानते थे। ऐसा जीवट व्यक्ति ही कह सकता है कि -

'ख़ूगर हुआ इंसाँ तो मिट जाता है रंज
मुश्किलें मुझ पर पड़ीं इतनी कि आसाँ हो गईं '

उनके मिज़ाज को बताने के लिए, उसकी साक्षी देने के लिए उन के चुटकुले और पत्र ही पर्याप्त है। गालिब ने भूख, निर्धनता, अपमान यहां तक की प्रियजनों का वियोग भी हिम्मत से सहन किया। इतने प्रहारों नें उनके व्यंग्य को भी तीक्षण कर दिया। इतनी सहजता कि बात सरल तो हो पर जिसका प्रभाव तीर जैसा सीधे हृदय पर हो। ये कहना आसान तो नहीं है कि -

'यह फ़िल्नः आदमी की खाना वीरानी क्या कम है
हुए तुम दोस्त जिसके, दुश्मन उसका आसमां क्यों हो ।'

अत्यंत पैना व्यंग्य है।

प्रकट में तो ये हंसमुख स्वभाव की सहज अभिव्यक्ति लगती है पर वस्तुतः यह यह एक ढाल थी जिसका गालिब ने दुनिया की तीखी प्रतिक्रिया से बचाव के लिए किया। गालिब हास्यमिश्रित व्यंग्य के पर्दे में अपने दुख छिपा जाते है-

'की मिरे कत्ल के बाद उसने जफ़ा से तौबा
हाय उस जूद पशेमाँ का पशेमाँ होना ।'

ये है गालिब की आत्मश्लाघा और बिल्कुल सही है और जायज भी। अपना मूल्य ज्ञात होना अहंकार नहीं होता।

विनम्रता का महत्व है पर यदि योग्यता है तो दीनता का कोई स्थान नहीं। उदार गालिब ही है जो स्वीकार सकते है कि

'रेख़्ते के तुम्हीं उस्ताद नहीं हो 'ग़ालिब'
कहते हैं अगले ज़माने में कोई 'मीर' भी था '

गालिब को अपनी कमजोरियां भी पता थी पर इसकी स्वीकारोक्ति सबके वश की बात नहीं है पर गालिब फिर गालिब ऐसे ही नहीं हैं इसीलिए वे कहते है

होगा कोई ऐसा भी कि 'ग़ालिब' को न जाने
शाइर तो वो अच्छा है प बदनाम बहुत है

एक ही शेर में प्रशंसा और निन्दा का ऐसा दृष्टांत अनूठा है। गालिब की जीवनवृत्त जानकर एक छोटा सा विचार मन में आता है कि गालिब जैसा विलक्षण प्रतिभा संपन्न शायर जिसकी शायरी की धूम तब भी थी आज भी है और हमेशा रहेगी उसने आर्थिक संकटों से उबरने को प्रयास किया ,अनेक झंझावतो को झेला पर कभी कुंठित नहीं हुआ वहीं कुछ रचनाएं लिखकर थोड़ा सा नाम बनाने वाले साहित्यकार तक सृजन की बजाय सम्मान के लिए चिंतित है। एक सत्य है जो शाश्वत हो और वो ये कि जैसे इत्र की सुगंध लाख तालों में रखने पर भी फैल ही जाती है वैसे ही क्षेत्र कोई भी हो प्रतिभा को दबाकर रखना संभव नहीं है। जैसे अनुकूल वातावरण पाकर बीज अंकुरित हो जाता है, वैसे ही सृजनात्मकता को पहचान मिलती अवश्य है। गालिब आज भी इसीलिए प्रासंगिक है कि वे सिखाते है कि कठिनाईयों में भी कुंठित और हुए जीवन की गति के साथ तालमेल बैठाया जा सकता है

'हैं और भी दुनिया में सुख़न-वर बहुत अच्छे
कहते हैं कि 'ग़ालिब' का है अंदाज़-ए-बयाँ और'

ये अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं है आज भी गालिब की टक्कर का शायर कोई न हीं है।

●●●

ईनाम और सजा

अरुण कुमार गुप्ता

जमाना अंग्रेजों का था। वक्त तीस के दशक का, बस यूं समझ लीजिए दूसरे विश्वयुद्ध के एक-आध साल पहले का। उन दिनों पुलिस महकमे में दारोगा, हवलदार और सिपाही हिंदुस्तानी होते थे, और आला अफसर ज्यादातर गोरे फिरंगी जो मातहतों के कामकाज का मुआयना और सुपरविजन करते थे।काम अच्छा हो तो ईनाम और खराब होने पर सजा दिया करते थे। ये अफसर ब्रिटिश फौज के दोयम दर्जे के अफसर होते थे और इन्हें बतौर ईनाम भारतीय पुलिस में बेहतर ओहदों पर तैनात किया जाता था। उन दिनों अपराधों की तफ्तीश और दीगर कामकाज की लिखत-पढ़त उर्दू जुबान में हुआ करती थी। अफसर साहबान की मदद के लिए जिले के पुलिस दफ्तर भी दो अदद हिस्सों में बटा होता था। बाहरी खतो-किताबत

(पत्र-व्यवहार) के लिए बड़े बाबू का इंग्लिश आफिस और जांचों - तफ्तीशों पर नजर रखने के लिए पेशकार का उर्दू आफिस।

उन्हीं दिनों जिला कटहल गंज के नये नये तैनात हुए अंग्रेज कप्तान

साहब बहादुर जनाब राबर्ट बिचसन ने पहली बार अपने अंग्रेजी जानने-समझने वाले पेशकार को कह कर जिले के थाना खुड़पेंच गंज के मुआयने के लिए तारीख मुकर्रर कर दी।

चूंकि मुआयने का प्रोग्राम पहले से तय था सो कोतवाल बख्तावर सिंह ने पूरी तैयारी कर रखी थी।थाने के इलाके में आने वाले गांवों के चौकीदारों की ड्यूटियां लगाई गई। कस्बे से बाहर जंगल महकमे के डाक बंगले को कप्तान साहब के रहने लायक रंगाई-पुताई से चकाचक किया गया। शहर से बढ़िया बिस्कुट, मिलेट्री कैंटीन से उम्दा किस्म की व्हिस्की की बोतलें, मेवे, अंग्रेजी किस्म का नाश्ता बनाने का सामान मंगा कर रखा गया । पास के गांव कड़छी पुर के जमींदार लाल साहब सिंह को संदेशा भेज शिकार का बंदोबस्त कराया गया था।

साहब की जीप जैसे ही डाक बंगले पर रुकी,उनकी अगवानी के लिए कोतवाल बख्तावर सिंह के अलावा कस्बे के मुअज्जिज लोग व दीगर महकमों के अफसर भी मौजूद थे। साहब बहादुर की सलामी और चाय-काजू आदि से खातिर तवज्जो के बाद सफर से थके साहब ने उस दिन आराम फरमाना मुनासिब समझा। शाम को जमींदार लाल साहब सिंह की हवेली पर बढ़िया दावत और नाच-गाने के लिए इलाके की तीन नफर नामचीन तवायफों का भी इंतजाम था। कप्तान साहब ने दावत और नाच-गाने का खूब लुत्फ उठाया। अगला दिन जंगल के बीहड़ों में शिकार की तलाश में बीता। काफी मशक्कत के बाद एक अदद तेंदुआ और एक हिरन का शिकार मुमकिन हो पाया। उस शाम का खाना पीना खुड़पेंच गंज कस्बे के पुराने आढ़ती गड़पू मल डकार चंद की कोठी में रखा गया।

अगले दिन सुबह नाश्ते के बाद साहब थाने पर तशरीफ लाए। पेशकार की मदद से रजिस्टरों, फाइलों और अपराध के स्टेटमेंट्स का मुआयना शुरू हुआ।कोतवाल ने हेड मोहर्रिर की मदद से तैयार थाने में दर्ज मुकदमों की तफ्तीश का चिट्ठा पेश किया। कोतवाल की मौजूदगी में थाना के हेड मोहर्रिर ने सिलसिलेवार मुकदमों की तफ्तीश का नतीजा पढ़ना शुरु किया।

सभी मुकदमों की तफ्तीश के नतीजे वाले कालम में ज्यादातर दो तरह का नतीजे दर्ज थे -

1- हिकमत अमली से कार्रवाई अमल में लाई गयी। नतीजतन मुल्जिमान दस्तयाब हुए। चालान दाखिल अदालत किया गया।

2- हरचंद कोशिश के बावजूद माल औ मुल्जिमान का पता न चल सका। फाईनल रिपोर्ट दाखिल अदालत किया गया।

थोड़ी देर तक कप्तान साहब सुनते रहे। अचानक मुआयना खत्म करने का इशारा करते हुए अपने पेशकार से बोले- 'वेरी गुड! हिकमाट आली हैज डन अ वंडरफुल जाॅब। ही शुड बी रिवार्डेड ऐंड हू इज दिस हरचांड? शुड बी प्लेस्ड अंडर सस्पेंशन।' फिर कोतवाल बख्तावर सिंह की ओर देख कर हिंदी में हुक्म दिया - " ठीक हाय। हिकमट आली को रिवार्ड डिया जाए और हरचंड को सस्पेंड कर डिया जाए।"कोतवाल ने चलते वक्त पेशकार की मुट्ठी में कुछ नोट चुपचाप दबा दिए। इसके बाद साहब बहादुर थाने से जोरदार सलामी लेकर खुशी-खुशी रुख्सत हुए ●●●

सम्बन्धों की डोर

देशव्यापी वर्मा

जीवन के सतत प्रवाह में,
हैं ऊभ-चूभ अभिलाषाएं।
कुछ खोना नही,सब पाना है,
कितनी-कितनी हैं आशाएं।
कुछ डोर बंधाए जाते हैं,
कुछ स्वयं ही बंध-बंध जाते हैं।
हर डोर पकड़ कर रखना है,
हर डोर को बांधे रखना है।
कोई छूट गया तो क्या होगा,
इस डर में है सिमटी प्रत्याशा।
जीवन की नदिया है अविकल,
कुछ दूर किनारा,है आशा।
जो बंधन कल तक प्यारे थे,
क्यों आज वो छिलते-चुभते हैं।
विश्वास का सम्बल था जिनमें,
शंका के ज्वार क्यों उठते हैं।
आदान-प्रदान सम्बन्धों का,
इतना निर्बल नही होना है।
प्रेम के अमृत से सींचो,
देखो,फिर कुछ नही खोना है।
जीवन सरिता बहती अविरल,
बस तैरते-तिरते जाना है।

ग़ज़लें

रतन कुमार श्रीवास्तव 'रतन'
निजी सचिव, उ0प्र0 सचिवालय,
मो0 नं0- 9454410101

1.

बदल जायेगी ज़िंदगी, जो तुम साथ दो।
मिल जायेगी हर ख़ुशी, जो तुम साथ दो।।
भले अँधेरा बहुत है, इस राह में लेकिन,
दिखने लगेगी रोशनी, जो तुम साथ दो।।
आब समन्दर का लेकर क्या करेंगे हम,
मिट जायेगी तिश्नगी, जो तुम साथ दो।।
चल रहे हैं हम तो तन्हा गरम रेत पे,
बहने लगेगी नदी, जो तुम साथ दो।।
बस कुछ लम्हों की ही नहीं ये बात है,
मुस्कुरायेगी ये सदी, जो तुम साथ दो।।
खिलेंगे फूल अब इस वीराने दयार में,
हँसने लगेगी कली, जो तुम साथ दो।।
सुन लो दिल की आवाज़ बस एक बार,
दूर हो जायेगी बेख़ुदी, जो तुम साथ दो।।

2.

हो गई बेवफ़ा ज़िंदगी झूठे ऐतबार पर।
और हम करते रहे नाज़ अपने प्यार पर।।
न मिलीं वफ़ाएं और न ही ख़ुशबू मिली,
मैं हैरां बहुत हूँ, गुल-ए-गुलज़ार पर।।
हारकर ज़िंदगी, इतना तो जाना हमने,
कि जीती जाती है जंग तो तलवार पर।।
कर बेवफ़ाई दिल को इतना रुसवा किया,
कि कोई अक़्स नहीं, दर-ओ-दीवार पर।।
जब अपनों ने ही गिराई हैं बिजलियाँ,
तो क्या लगायें तोहमतें हम बहार पर।।
मना रहे हैं जश्न वो अपनी जीत पर,
और मना रहें मातम हम, अपनी हार पर।।

24 घंटे आपातकालीन सुविधा

RBSK

विश्वस्तरीय स्वास्थ्य सेवायें
अब आपकी पहुँच में...

अमेरिका की स्माईल ट्रेन संस्था द्वारा जन्मजात कटे होंठ एवं कटे तालू का निःशुल्क ऑपरेशन एवं उपचार

अमेरिका की स्माईल ट्रेन संस्था अब राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम से भी सम्बद्ध

हेल्थ सिटी हास्पिटल
TRAUMA CENTRE & SUPERSPECIALITY HOSPITAL

गोमती नगर थाने के पीछे

SmileTrain TEAM EMPOWER

डॉ0 आदर्श कुमार
सीनियर कन्सल्टेंट–स्माइल ट्रेन, प्लास्टिक सर्जन

डॉ0 रोमेश कोहली
प्लास्टिक सर्जन

डॉ0 एस.पी.एस. तुलसी
मैक्सिलोफेशियल सर्जन

डॉ0 वैभव खन्ना
प्रोजेक्ट डायरेक्टर–स्माइल ट्रेन, प्लास्टिक सर्जन

प्लास्टिक सर्जरी विभाग में उपलब्ध अन्य सुविधायें

- समस्त प्रकार की चोट, यातायात दुर्घटना एवं घायल अवस्था (All types of Trauma & Accidents)
- जन्मजात एवं अन्य विकृतियों की पुनः निर्माण शल्य क्रियायें (Reconstructive Surgery)
- रीप्लान्टेशन व माइक्रोवैस्कुलर शल्य क्रिया (Replantation & Microvascular Surgery)
- कॉस्मेटिक शल्य क्रियायें (Cosmetic Surgery)
- बाल प्रत्यारोपण (Hair Transplant)
- अन्य समस्त प्रकार की प्लास्टिक सर्जरी की सुविधा उपलब्ध है

अगर आप ऐसे किसी भी रोगी को जानते हैं तो तुरन्त निम्न पते पर भेजें या सम्पर्क करें:

SmileTrain Changing the World One Smile at a Time

SMILE TRAIN PROJECT (U.S.A.)-
FREE TREATMENT OF CLEFT LIP AND CLEFT PLATE PATIENTS

NH-A & B Vijay Khand-2, Gomti Nagar, Lucknow-226010
Ph.: 0522-4063608, 9935880201, 9453167711
Email: dr.vaibhavkhanna@yahoo.in, hrccpllko@gmail.com
www.lucknowwhealthcity.com

HELPLINE CALL 9454159999

विद्युत उत्पादन से
राष्ट्र का सशक्तिकरण

हमारा साझा विजन

2040 तक 50000 मेगावाट

2030 तक 25000 मेगावाट

**घरों, उद्योगों एवं अर्थव्यवस्थाओं के लिए स्वच्छ,
विश्वसनीय एवं स्थाई ऊर्जा प्रदान करने में अग्रणी**

*एक सतत् एवं समावेशी भविष्य के लिए हमसे जुड़ें।
आइए मिलकर प्राकृतिक ऊर्जा को अपनाएं, नवाचार को आगे बढ़ाएं
और एक उज्ज्वल, हरित भविष्य का निर्माण करें।*

एसजेवीएन लिमिटेड
SJVN LIMITED
(भारत सरकार एवं हिमाचल प्रदेश सरकार का संयुक्त उपक्रम)
'नवरत्न सीपीएसई'

पंजीकृत कार्यालय : शक्ति सदन, कारपोरेट ऑफिस काम्पलैक्स,
शनान, शिमला-171006, हिमाचल प्रदेश (भारत)

सम्पर्क कार्यालय : ऑफिस ब्लाक, टॉवर-1, 6वीं मंजिल,
एनबीसीसी कॉम्पलैक्स, ईस्ट किदवई नगर, नई दिल्ली-110023

www.sjvn.nic.in

@Sjvnlimited @Sjvnlimited @sjvnlimited